।। ओ३म् ।।

प्रभु से विनय

आज हम प्रभु की याचना कर रहे हैं हे प्रभु! तू स्वयँ यज्ञ है। तेरी महानता इन वेदों में परणित हो रही है। वेद की जो अनुपम धारा है वही प्रकाश मानव के अन्तःकरण को पवित्र बनाता है। क्योंकि वेद की जो अनुपमता है, ब्रह्मविद्या है, महानता है, इसमें उसका एक-एक शब्द पक्षपात से रहित है। उसी को तो ब्रह्मविद्या कहते हैं। क्योंकि परमात्मा में रूढ़ि नहीं होती, इसलिए वेद में भी रूढ़ि नहीं है। इसलिए वेद के अनुसार मानव को अपने जीवन को ऊँचा बनाना चाहिए। जो मानव रूढ़ियों में परणित हो जाते हैं, उनके जीवन में विनाश हो जाता है। उनका जो मानसिक संकल्प होता है, उसकी धाराओं में भिन्नता आ जाती है।

हम परमपिता परमात्मा की उपासना करते हुए यज्ञशाला में परणित होते हुए अपने विचारों का यज्ञ करते चले जायें। नाना प्रकार का संकल्प हो, संकल्प के साथ में हमारा एक मानसिक संकल्प हो, प्राण का ही उसमें निदान हो, उसके पश्चात् जब हम उसमें आहुति देते हैं तो वह आहुति द्यौ लोक को प्राप्त होती है। देवतागण उसको प्राप्त करते हैं और देवता जब तृप्त होते हैं तो राष्ट्रवाद को क्या, समाज को पवित्र बनाते चले जाते हैं। परमाणुवाद को ऊँचा बनाते चले जाते हैं। क्योंकि **यह जितना जगत है यह सब परमाणुओं की ही रचना है।** द्यौ लोक का जो घृत है उसमें कितने सूक्ष्म परमाणु होते हैं, और वह परमाणु जब अग्नि उद्गाता बन करके और वायु अध्वर्यु बन करके जब उसका साकल्य उसमें प्रदान किया जाता है तो द्यौ लोक में कितनी महान गति होती है, जितना मानव का हृदय स्वच्छ और पवित्र होता है, ममता से रहित होता है, नाना प्रकार की विडम्बनाओं से रहित होता है उतना ही द्यौ लोक को मानव का संकलन प्राप्त होता चला जाता है।

पूज्यपाद-गुरुदेव

अँक : 515	कुल पृष्ठ संख्या	समग्र अँक : 590
वर्ष : 43	44	समग्र वर्ष : 50

अनुक्रम

क्रम संख्या	विषय		पृष्ठ संख्या
1.	प्रभु से विनय	पूज्यपाद-गुरुदेव	3
2.	अनुक्रम		4
3.	नैतिक-शिक्षा	पूज्यपाद-गुरुदेव	5-22
4.	सदाचार	पूज्यपाद-गुरुदेव एवम् महर्षि महानन्द जी	23-37
5.	ऋषियों के उद्गार	पूज्यपाद-गुरुदेव	38
6.	दान, पुस्तकों की सूची, प्राप्ति के स्थान व सूचना आदि		39-43

श्रावणी-पर्व

परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा और पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की पावमानी प्रेरणा से रक्षाबन्धन के शुभावसर पर दिनाँक 29-8-2015, दिन शनिवार को प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी लाक्षागृह, बरनावा में सामवेद ब्रह्म-पारायण महायज्ञ का आयोजन श्री गाँधी धाम समिति द्वारा आयोजित किया जा रहा है। आप सभी इस यज्ञ में अपने परिवार, सगे-सम्बन्धियों एवम् मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

श्री गाँधी धाम समिति (पञ्जी.)

।। ओ३म् ।।

नैतिक शिक्षा

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद वाणी में उस महामना परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वह परमपिता परमात्मा अनन्तमयी हैं और जितना भी यह जड़ जगत् अथवा चैतन्य जगत् हमें दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वह परमपिता परमात्मा दृष्टिपात आते रहते हैं। क्योंकि यह संसार दो विभागों में विभक्त होता रहा है—एक चेतना में और द्वितीय जड़वत् में माना गया है जो चेतना से शून्य है और जो चेतनामयी है परन्तु दोनों के मूल में वह परमपिता परमात्मा दृष्टिपात आ रहे हैं। मेरे प्यारे! एक-एक वेदमन्त्रः उस परमपिता परमात्मा की गाथा गा रहा है जिस प्रकार माता का पुत्र माता की गाथा गा रहा है, जिस प्रकार यह पृथ्वी ब्रह्माण्ड की गाथा गा रही है इसी प्रकार प्रत्येक वेद का शब्द और मन्त्र उस परमपिता परमात्मा की गाथा गा रहा है अथवा उसका वर्णन कर रहा है।

वसुन्धरा

हमारे वैदिक साहित्य में उस **परमपिता परमात्मा को वसुन्धरा के रूप में वर्णित किया गया है।** हमारे यहाँ वसुन्धरा का अभिप्रायः यह है क्या जिसके गर्भ में हम सब वशीभूत हो रहे हैं उसका नाम वसुन्धरा है। जिस प्रकार माता के गर्भस्थल में हम जैसे शिशु पनपते रहते हैं और माता अपने गर्भ में धारण किए रहती है उसके अंग प्रत्यंगों का निर्माण होता रहता है। परन्तु उसके मूल में भी इससे पूर्व काल में

हमने प्रगट कराया था उसके मूल में भी वह परमपिता परमात्मा विद्यमान रहते हैं। परन्तु हे मनम् ब्रह्मा वर्णस्सुतम् हे माता तुझे वेद वसुन्धरा कहता है। वसुन्धरा का अभिप्रायः यह है कि जिसके गर्भ में बेटा! हम वशीभूत रहते हैं, नाना प्रकार की बुद्धियों का निर्माण जहाँ होता है, जहाँ बुद्धि, मेधा, ऋतम्भरा और प्रज्ञावी का निर्माण होता रहता है। मेरे प्यारे! **माता के गर्भ में सबसे प्रथम बुद्धि का निर्माण होता है।** बुद्धि उसे कहते हैं जो दृष्टिपात कर लेती है परन्तु मेधा उसे कहते हैं जो उसको दृष्टिपात करके उसको निर्माण में ला देती है उसको मानो अपने में धारयामि बन जाती है और संसार को जानने के पश्चात् परन्तु ऋतम्भरा अपने में मौन हो जाती है। और मुनिवरो! जहाँ वह मौन हो करके परमपिता परमात्मा का जो शून्यमयी बिन्दु है मानो उसके समीप और उस बिन्दु को विवेचना में लाना उसको जानने का नाम प्रज्ञावी कहलाता है। तो बुद्धि, मेधा, ऋतम्भरा और प्रज्ञा मेरे प्यारे! देखो वसम् ब्रह्मा लोकम् ब्रव्हा नाना प्रकार के मानो देखो उसके रूपान्तर माने गये हैं। आज मैं तुम्हें आन्तरिक जगत में नहीं ले जा रहा हूँ केवल विचार-विनिमय यह कि हम अपने में अपनेपन को जानते चले जाएँ जिससे हमारा जीवन अपने में ही मानो समाहित होता हुआ दृष्टिपात होने लगे।

आओ मेरे प्यारे! देखो **हमारे यहाँ वसुन्धरा नाम माता को कहा गया है** जिस माता के गर्भस्थल में निर्माणवेत्ता निर्माण करता रहता है—कहीं मनस्तत्त्व का निर्माण है, कहीं मानो चित्त की वृत्तियों का निर्माण हो रहा है तो मेरे पुत्रो! देखो यह मानव शरीर की प्रतिभा कहलाती है।

इसके पश्चात् वसुन्धरा नाम पृथ्वी माता को कहा गया है। इस पृथ्वी के गर्भ में कहीं बेटा! देखो खाद्यान्न पनप रहा है तो कहीं खनिज पनप रहा है नाना प्रकार के इस माता के गर्भ में नाना प्रकार के व्यंजनों का जन्म होता रहता है। जब वैज्ञानिकजन इस मानो पृथ्वी वसुन्धरा के ऊपर अन्वेषण करना प्रारम्भ करते हैं तो इसके गर्भस्थल में नाना प्रकार का खनिज मानो देखो ओत-प्रोत हो रहा है। कहीं जल जैसी धातु को मानो सूर्य की आभा में इसको तपायमान किया जा रहा है

जिससे वाहन अपने में गतिवान होता है, कहीं जल को शक्तिशाली बनाया जा रहा है। कहीं अग्नि मानो सूर्य की नाना प्रकार की कान्ति के द्वारा मुनिवरो! कहीं खनिजों को तपाया जा रहा है, कहीं रत्नों का निर्माण हो रहा है, कहीं मानो स्वर्ण जैसी धातु का निर्माण हो रहा है परमाणुवाद देखो आदान-प्रदान हो रहे हैं। तो मेरे प्यारे! यह माता वसुन्धरा के गर्भ में बेटा! क्या नहीं है? नाना प्रकार का खाद्यान्न इसके गर्भ में विद्यमान रहता है। नाना प्रकार का अन्नाद इसी से उत्पन्न होता है वह खाद्यान्न कहलाता है। जितना भी प्रत्येक प्राणी को प्राप्त होने वाला खाद्यान्न है वह माता वसुन्धरा के गर्भ में विद्यमान रहता है, मानव उसी में पनपता रहता है।

विचार क्या मुनिवरो! जब यह मानव माता के गर्भस्थल में विद्यमान होता है तो माता की नाना नस नाड़ियों के द्वारा यह ओज और तेजोमयी मानो रसों को अपने में प्रदान करता रहता है और जब यह बाह्य जगत् में आता है तो माता वसुन्धरा की गोद में आ जाता है यह पृथ्वी माता नाना प्रकार के खाद्य और खनिज पदार्थों को ले करके मानव को उज्ज्वल बना देती है। परन्तु देखो जब माता वसुन्धरा के गर्भ से भी यह उपराम होता है तो वह जो चैतन्य देव है परमपिता परमात्मा मानो देखो उसका वह गान गाने लगता है और यह उसके संरक्षण में परणित हो जाता है जहाँ बेटा! देखो वह वेदाम् ज्ञानाम्! भूतप्रव्हा वर्णस्सुते देवत्वाम् मानो जो देवत्व को प्राप्त करा देता है।

मेरे प्यारे! मुझे एक बड़ा आश्चर्यजनक ऋषि-मुनियों की वार्ताएँ जब स्मरण आने लगती हैं तो मैं प्रायः देखो गद्गद हो जाता हूँ क्योंकि ऋषि मुनियों का जो अपने में विचार-विनिमय होता रहा है वह बड़ा गम्भीर क्योंकि वह तपोमय माना गया है। तो मेरे प्यारे! देखो उस माता वसुन्धरा के गर्भ में हमें जाना है और **वसुन्धरा नाम उस चैतन्य प्रभु को कहा जाता है जो मानो देखो वेदज्ञ है, प्रकाशक है, अग्निमयी है, आपोमयी कहलाता है जो ब्रह्ममयी मानो देखो श्रोत्रों में विद्यमान रहता है।** जिसे हमारे यहाँ विष्णु के रूप में परणित किया गया है क्योंकि वह पालन करने वाला है। वह विष्णु है और विष्णु ही बेटा! देखो पालन करता है। जैसे वृक्ष पर मानो देखो नाना प्रकार के फल आ जाने

के पश्चात् मुनिवरो! देखो वह नम्र हो जाता है इसी प्रकार माता के गर्भस्थल से जब हम जैसे पुत्रों का जन्म होता है तो माता भी नम्र हो जाती है, माता में ममतामयी आ जाती है। इसी प्रकार परमात्मा मानो नाना प्रकार से हमारा पालन करता है।

वह नमः है। परमात्मा के राष्ट्र में बेटा! देखो सदैव प्रकाश रहता है, अन्धकार नहीं रहता इसीलिए वह प्रकाशक है। परमपिता परमात्मा मानो जैसे प्रकाशक कहलाता है अमृमब्रव्हा व्रतम् देवाः बेटा! वह परमपिता परमात्मा ब्रह्म है वह मानो देखो ब्रह्ममयी कहलाता है। परमपिता परमात्मा की प्रतिभा क्योंकि वह नम्र है इसीलिए मानव को नम्र हो जाना चाहिए। परमात्मा देखो अकाय है वह काया से रहित है इसीलिए **जब चिन्तन में विराजमान हो तो यह उस वस्तु का चिन्तन करें देखो जिसमें काया का कोई समन्वय नहीं होता।** मेरे प्यारे! परमपिता परमात्मा निरभिमानी है इसीलिए मानव को अभिमान नहीं करना चाहिए। तो वह परमपिता परमात्मा एक रस रहने वाला है इसीलिए मानव को एक रस रह करके परमपिता परमात्मा के राष्ट्र में भ्रमण करना चाहिए, भ्रमण करना चाहिए।

आज बेटा! मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा न देता हुआ, आज मैं बेटा! तुम्हें देखो वहीं राजा जनक के यहाँ ले जाने के लिए सदैव तत्पर रहता हूँ। मेरे प्यारे! देखो राजा जनक के यहाँ क्या और भी नाना प्रकार की वार्ताएँ आती रहती हैं। मुनिवरो! देखो मुझे महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज का जीवन जब स्मरण आता है तो अन्तर्हृदय गदगद हो जाता है। प्रायः देखो ऋषि-मुनियों का जीवन तो सदैव ही विचारणीय रहा है, उनका अनुसन्धान बड़ा गम्भीर रहा है। मेरे प्यारे! वह निश्वृत्तियों में मानो प्रकाश से वह ओत-प्रोत रहने वाला उनका विचार है। तो आओ बेटा! देखो आज मैं तुम्हें ऐसे क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ जहाँ मैंने बहुत सी वार्ताएँ बेटा! तुम्हें प्रगट की हैं। मेरे प्यारे! देखो मानो हुराम् भूतम् ब्रह्मा लोकाम् वसुतम् देवाः। मेरे प्यारे! देखो याज्ञवल्क्य मुनि महाराज अपने आसन पर विद्यमान हैं परन्तु देखो चाक्राणी गार्गी अमृतम् विश्वम् ब्रह्मा लोकाम् मेरे प्यारे! न्योदा में वेदमन्त्रों का वह प्रायः अध्ययन करती रहती थी।

महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज की नैतिक-शिक्षा

नैतिक शिक्षालयों में जब बेटा! विद्यालयों में जब याज्ञवल्क्य मुनि महाराज प्रातः कालीन ब्रह्मचारियों को नैतिकता में ले जाते तो नैतिकता में एक समय वह ब्रह्मचारियों को उद्गीत गाने लगे **हे ब्रह्मचारियों तुम याग करो क्योंकि याग करने से ही तुम्हारा मानवीयत्व पवित्रता में परणित होता रहेगा।** क्योंकि तुम्हारा मन मस्तिष्क एकाग्र हो करके तुम वेदज्ञ बन करके ही प्रकाश में रत्त हो जाओगे। तो मेरे प्यारे! देखो अमृतम् ब्रहे तो जब याज्ञवल्क्य मुनि महाराज एक समय प्रातः कालीन न्योदामय वेदमन्त्रों का अध्ययन करते हुए उन्होंने कहा कि वेदमन्त्र कहता है तपम् ब्रहे वर्णस्सुतम् देवत्वाम् हे ब्रह्मचारियों तुम्हारा जीवन तपोमय होना चाहिए। क्योंकि हमारे यहाँ प्रातःकालीन जब ब्रह्मचारीजन विद्यालयों में ओत-प्रोत हो करके बेटा! याज्ञवल्क्य और वह आचार्यजनों ने नैतिक शिक्षा प्रथम दिया करते। मुझे स्मरण आता रहता है बेटा! वह मृत्यु से पार होने का उपदेश देते और यह कहा करते हे ब्रह्मचारियों तुम्हारे नेत्रों में अग्नि का वास है इसीलिए तुम नेत्रों को अग्निमयी बना लो और तुम्हारी वाणी में अन्तरिक्ष का, तुम्हारी वाणी में रसों का व्यवधान होता रहता है तुम अपनी वाणी को रसों में मधुर बना लो और रसोमय बनाओ। घ्राण में मानो इसका पृथ्वी से समन्वय रहता है इसलिए पृथ्वी के तुल्य मानो देखो गुरुत्व सुगन्ध को ले करके इसको अग्रणीय बनाने का प्रयास करो। हे ब्रह्मचारियो देखो तुम्हारे जो श्रोत्र इन्द्रियाँ हैं इनका सम्बन्ध अन्तरिक्ष से रहता है अपने जीवन को अन्तरिक्षमय बना लो क्या मैं परमात्मा के अन्तरिक्ष में, राष्ट्र में विद्यमान हूँ। जहाँ बेटा! देखो शब्दों का, एक-दूसरे का समन्वय होता रहता है।

मेरे प्यारे! आचार्य कहता है हे ब्रह्मचारी तुम्हारा प्राणम् में शुन्धामि, चक्षु में शुन्धामि तुम्हारा प्राण अपने में प्रणत्व रहना चाहिए। मेरे प्यारे! जब देखो ब्रह्मचारी को आचार्य मृत्यु से पार कर देता है और मृत्यु देखो उसे कहते हैं जहाँ अज्ञान होता है। तो अज्ञान को जब आचार्य नष्ट कर देता है तो ब्रह्मचारी ज्ञान में प्रवेश हो जाता है और ज्ञान क्या है मानो देखो इन्द्रियों में जो पञ्च महाभूतों का वास रहता है। आत्मा मानो देखो

यह अमृतमयी कहलाता है। तो इसीलिए देखो नेत्रों में अग्नि है और श्रोत्रों में अन्तरिक्ष, दिशाएँ विद्यमान रहती हैं और मुनिवरों! देखो प्राणम् ब्रह्मा व्रतम् देवत्वाम् यह अपने-अपने स्वरूप में रहते हैं। जब भी विज्ञानवेत्ता बेटा! अपने में अनुसन्धान करने लगा है या साधक अपने में साधना करने लगा है तो इन इन्द्रियों के सम्बन्ध में बेटा! जानता हुआ इनसे वह मृत्यु से पार हो जाता है। इन्द्रियों के विषयों को जानना और जान करके इसके ऊपर अपने जीवन को बनाना ही बेटा! देखो मृत्यु से पार होना है। हमारे यहाँ मृत्यु का अपना कोई अस्तित्व नहीं होता, मृत्यु अपने में कोई मृत्यु नहीं हुआ करती है क्योंकि अज्ञान का नाम मृत्यु है और **प्रकाश और ज्ञान का नाम ही मुनिवरो! देखो अमृतमयी जीवन कहा गया है।** तो विचार आता रहता है मृत्युञ्जम् ब्रह्मा लोकाम् वर्णस्सुतम् यह संसार सब परिवर्तनशील रहता है, मेरे प्यारे! अपने-अपने अव्ययों में परणित हो जाते हैं।

मृत्यु क्या है

आओ आज मैं तुम्हें बेटा! एक ऋषि के आसन पर ले जाना चाहता हूँ, जो मैंने बहुत पुरातन काल से ही अपने विचार देने के लिए मैं सदैव तत्पर रहा हूँ। मेरे प्यारे! मुझे स्मरण है एक समय महात्मा जमदग्नि के यहाँ एक सभा का आयोजन हुआ। मैं विस्तार से नहीं केवल तुम्हें परिचय ही दूँगा जहाँ मुनिवरो! देखो महाराजा जमदग्नि के यहाँ नाना ऋषि-मुनियों का समूह एकत्रित हो गया जिसमें बेटा! देखो महर्षि प्रह्लाण, महर्षि शिलक, महर्षि दालम्य, देवर्षि नारद और रेवक मुनि महाराज, ब्रह्मचारी कवन्धि, ब्रह्मचारी सुकेता और भी मुनिवरो! देखो जैसे पिप्पलाद इत्यादि विद्यमान थे और वह महर्षि वैश्मपायन। तो मेरे प्यारे! देखो उस सभा में महात्मा जमदग्नि के यहाँ वह सभा हुई। तो महात्मा जमदग्नि ने एक प्रश्न किया अमृतम् मृत्यम् ब्रव्हे व्रतम् वृति देवाः तो ऋषि ने बेटा! यह प्रश्न किया हे ऋषिवर मैंने तुम्हें इसलिए एकत्रित किया कि तुम में कुछ ब्रह्मवेत्ता हैं, कुछ ब्रह्मनिष्ठ हैं और कुछ ब्रह्म जिज्ञासु हो तुम तो मैंने इसलिए एकत्रित किया है क्या मैं जानना चाहता हूँ कि मृत्यु क्या है संसार में जिसके ऊपर मानव सदैव परम्परागतों से

व्याकुल रहा है और मृत्युञ्जय बनने के लिए मानव की पिपासा जागरुक होती रहती है। तो यह मृत्यु क्या है? तो मेरे प्यारे! देखो जब यह प्रसंग आया तो ऋषि-मुनि सब शान्त हो गए। पारेत्वर ऋषि महाराज ने कहा क्या महात्मा जमदग्नि के प्रश्नों का उत्तर दिया जाए। वेदमन्त्र कहता है क्या यह मृत्यु क्या है यह प्रश्न करता है परन्तु वेदमन्त्रों में उत्तर भी प्रायः प्राप्त होता रहता है परन्तु तुमसे जानना चाहते हैं। तो बेटा! देखो, ऋषि-मुनियों में एक सांत्वना आ गई।

चाक्राणी-गार्गी

परन्तु इतने में चाक्राणी गार्गी भी उस सभा में विद्यमान थी। वह बड़ी विदुषी, जब वह वेद का गान गाती थी तो सिंह और सर्पराज उनके चरणों का चुम्बन किया करते थे क्योंकि देखो अहिंसावादी जो प्राणी होते हैं वह मुनिवरो! देखो हिंसा को त्याग देते हैं और वह अहिंसक बन करके मेरे प्यारे! अपने प्रभु का गान श्रवण करने के लिए सदैव तत्पर हो जाते हैं। तो मेरे प्यारे! देखो चाक्राणी गार्गी उपस्थित हुई उन्होंने कहा हे ब्रह्मवेत्ताओं यदि मानो देखो तुम चाहते हो तो मैं इनके प्रश्नों का उत्तर दे सकूँ? ऋषि-मुनियों ने कहा अवश्य उद्गीत गाईए। तो चाक्राणी गार्गी ने कहा हे प्रभु इस शरीर का और आत्मा का दोनों का पृथक्-पृथक् हो जाना ही मृत्यु कहा जाता है। परन्तु इतने में गार्ग्यपत्य ऋषि महाराज उपस्थित हुए और गार्ग्यपत्य ने कहा हे देवी इसे तो मृत्यु नहीं कहते क्योंकि मानो देखो ब्रव्हे व्रतम् आत्मा पृथक् है और शरीर का अव्यय पृथक है तो इसको मृत्यु नहीं कहते क्योंकि उनके अस्तित्व ज्यों के त्यों बने रहते हैं।

मेरे प्यारे! देखो चाक्राणी बोली प्रभु मैंने तो यही तप साधना की है क्योंकि ऋषि-मुनियों का जो जीवन रहा है वह सदैव निरभिमानी रहा है वह निरभिमानता से बोली प्रभु मैंने तो इतना ही जाना है आगे अन्वेषण करती रहूँगी तो इसके ऊपर विचार विनिमय होगा।

महर्षि पिप्पलाद मुनि महाराज का निर्णय

मेरे प्यारे! इतने में महर्षि पिप्पलाद मुनि महाराज उपस्थित हुए

और पिप्पलाद मुनि ने यह कहा अमृतम् ब्रह्मा वृत्यम् ब्रव्हे व्रत्याम् अभावाम् भूतप्रव्हाः वेद के ऋषि ने कहा क्या हे ऋषियों मेरे विचार में तो आता है कि मृत्यु का अभाव है, मृत्यु अपने में कोई मृत्यु नहीं होती, यह मृत्यु का अभाव है। मेरे प्यारे! देखो इसमें नाना प्रकार के प्रसंग उत्पन्न हुए परन्तु देवर्षि नारद मुनि ने इसका समर्थन किया और मुनिवरो! महर्षि प्रह्लाण जी ने भी यह कहा कि वास्तव में मृत्यु का अभाव है, मृत्यु अपने में कोई मृत्यु नहीं होती। मेरे प्यारे! देखो जब यह प्रसंग आया तो बोले कि माता अपने पुत्र के वियोग से मानो वह विवेकनी क्यों हो जाती है? उन्होंने कहा कि उसमें संकल्पाम् भूतम् ब्रह्मा यह केवल संकल्प मात्र है। संकल्प का जब विच्छेद होता है तब भी अपार कष्ट होता है, जब उसका मिलन होता है तो अपार हर्ष होता है। मानो देखो इसका नाम कृतमयी मृत्यु नहीं बनता। मेरे प्यारे! देखो सायँकाल का समय था, संध्या का काल हो गया ऋषि-मुनियों ने मुनिवरो! देखो अपने-अपने आसन को त्याग करके अपने-अपने कक्ष में जा पहुँचे, संध्या में।

महर्षि पिप्पलाद मुनि का अपने आश्रम में प्रवेश

महर्षि पिप्पलाद मुनि महाराज बहुत समय के पश्चात् गृहस्थ आश्रम में आए। परन्तु उनका आश्रम भी निकटतम था वह वहाँ से भ्रमण करते हुए मुनिवरो! देखो अपने आश्रम में पहुँचे। उनकी देवी ब्रह्मे व्रतम् जब आश्रम में पहुँचे तो उनकी पत्नी शुकुन्तका ने उनके चरणों को स्पर्श किया और चरणों को स्पर्श करके वह व्याकुल हो गई। उन्होंने कहा देवी तुम व्याकुल क्यों हो रही हो? उन्होंने कहा देव आप इतने समय के पश्चात् आश्रम में तुम्हारा पदार्पण हुआ है परन्तु देखो मेरा एक सात वर्षीय पुत्र मृत्यु को प्राप्त हो गया है। उन्होंने कहा देवी तुम मृत्यु का शब्द उद्गीत रूप में गा रही हो मैं तो इसमें से शास्त्रार्थ और देखो विचार-विनिमय करके आ रहा हूँ। मैंने ब्रह्मवेत्ताओं की सभा में यह निर्णय दिया है क्या यह मृत्यु अपने में कोई मृत्यु नहीं होती, मृत्यु का अभाव है।

महर्षि पिप्पलाद मुनि और शकुन्तका सम्वाद

उन्होंने कहा तो प्रभु चलो मैं आपके वाक्यों को स्वीकार कर लेती

हूँ परन्तु मैं यह जानना चाहती हूँ भगवन् जब यह मृत्यु कोई वस्तु नहीं है तो **यह मेरा शरीर क्या है?** उन्होंने कहा देवी यह परमाणुओं का संघात है। माता के गर्भस्थल में एक बिन्दु जाता है, बिन्दु में शिशु है, देवताजन मानो इसकी रक्षा करते रहते हैं और वह परमाणुओं का एक बलवती होता रहता है मानो देखो अमृतम् ब्रह्मा व्रतम् उसमें वायु देखो उसमें जल परमाणु, तेजोमयी अग्नि के परमाणु और गुरुत्व पृथ्वी के परमाणु मानो देखो वायु उसमें प्राण देता है इसी प्रकार देखो अन्तरिक्ष अवकाश देता है और यह हमारे मानव के शरीर का निर्माण होता है। परन्तु बाल्यकाल में देखो माता के गर्भ से शिशु का जन्म होता है तो वह सूक्ष्म है परन्तु वह परमाणुओं का संघात होता रहता है, वह बलवती होता रहता है बलम् व्रते देखो युवा अवस्था को प्राप्त हो जाता है। फिर वह जीर्ण हो जाता है जीर्ण हो करके समय पर देखो पञ्चमहाभूतों का यह जो लोक है यह आत्मा से इसका विच्छेद हो जाता है। परन्तु इसको मृत्यु नहीं कहते यह तो परिवर्तन कहा जाता है।

परमाणुवाद कहाँ रहता है

देखो जब यह देवी ने श्रवण किया उन्होंने कहा चलो भगवन् यह वाक् भी मैं स्वीकार कर लेती हूँ परन्तु जब यह माता का अमृतम् ब्रह्मा लोकाम् जब यह शरीर मेरा इस रूप में नहीं था तो यह परमाणुवाद कहाँ रहता था? उन्होंने कहा देवी यही परमाणुवाद मानो कुछ माता के गर्भस्थल में निर्माण हो रहा था अमृताम् भूतम् ब्रह्मा वेदज्ञ प्रव्हा लोकाम् वर्णस्सुतम् मानो उसी से यह भाग्य उदय हो रहा था।

मेरे प्यारे! देखो शकुन्तका ने कहा प्रभु यह भी मैंने स्वीकार कर लिया परन्तु जब देखो माता का गर्भाश्य नहीं था तो यह परमाणुवाद कहा रहता था? उन्होंने कहा हे देवी यही परमाणुवाद मानो कुछ वीरत्व में विद्यमान था और कुछ मानो वीरांगना के रूप में विद्यमान था। देखो वीरांगना इन परमाणुओं की रक्षा करने वाली मेरी पुत्री वीरांगना बन जाती है, विवेक को प्राप्त हो जाती है और देखो इन्हीं परमाणुओं की रक्षा करने वाला ब्रह्मचारी ब्रह्मवर्चोसी बन जाता है, वह ब्रह्म की चरी को चरने लगता है। ब्रह्म कहते हैं परमात्मा को और चरी कहते हैं प्रकृति

को। जो यह दृष्टिपात होने वाला जगत् है यह दोनों को ब्रह्म और चरी को एकाग्र करता हुआ अपने में चरिष्यामि बन जाता है।

ब्राह्मण

हे देवी तुम्हें यह प्रतीत है कि ब्राह्मण किसे कहते हैं? ब्राह्मण कहते हैं जो ब्रह्मणं ब्रह्मे देवत्वाम् जो अपने में ब्रह्म को और ब्रह्म को अपने में स्वीकार करता है मानो वह ब्राह्मण कहलाता है। ब्रह्मवर्चसुतम् ब्रह्मे लोकाम् वाचस्सुतम देवाः याज्ञवल्क्य मुनि महाराज से जब यह प्रश्न किया गया क्या यह मानो ब्रह्मवर्च क्या है? उन्होंने कहा ब्राह्मण है। जो ब्राह्मण मानो अपने को ब्रह्म में स्वीकार करता है और ब्रह्म को अपने में, अपने को ब्रह्म में जो अपने को स्वीकार कर लेता है वह ब्राह्मण कहलाता है।

अमृत

मेरे प्यारे! देखो इस प्रकार जब उन्होंने अपनी वार्ता प्रगट की तो अमृतम् ब्रह्मा लोकाम् तो बेटा! वह ब्रह्मवर्चोसि बन जाता है और वह ब्रह्मचारी ही देवताओं की सभा में सुशोभनीय होता है जो ब्रह्म और चरी को अंगों और उपांगों से जानने वाला है वही मुनिवरो! देखो देवताओं की सभा में अमृत कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया उन्होंने कहा इनकी रक्षा करने वाला ही मानो देखो विष्णु कहलाता है, इनकी रक्षा करने वाला ही देखो आत्मतत्व को प्राप्त होता है। हे विष्णु आत्माम् भूतम् ब्रह्मा। मेरे प्यारे! वही अमृतम् शकुन्तका ने कहा हे प्रभु मेरा जो अन्तरात्मा है वह यह पुकार रहा है अमृताम् भूतम् ब्रव्हे देवत्वाम् क्या मैं अमृत को प्राप्त हो जाऊँ। तो देवी ने जब ऐसा कहा तो ऋषि ने कहा देवी अमृत को तो प्राप्त होना ही है।

ब्रह्मवर्चस्

मुनिवरो! देखो आगे अमृतम् ब्रव्हे क्रतम् आचार्यों ने इस प्रकार जब वर्णन किया तो आचार्य की वार्ता को पान करने वाली मेरी देवी ने, उस माता ने कहा हे प्रभु में जानना चाहती यह भी मैंने स्वीकार कर लिया है परन्तु मैं यह जानना चाहती हूँ क्या ब्रह्मवर्चस् किसे कहते हैं? उन्होंने कहा ब्रह्मचारी को कहते हैं। क्या ब्रह्मचारी कौन होता है? उन्होंने कहा

ब्रह्मचारी वह है जो ब्रह्म को जानता है। उन्होंने कहा ब्रह्मचारी कौन है? जो एक-एक श्वास का मनका बना करके बेटा! जो ब्रह्मसूत्र में पिरो देता है वह ब्रह्मचारी कहलाता है।

विष्णु

मेरे प्यारे! देखो जब उन्होंने इस प्रकार वार्ता प्रगट की तो उस समय देवी ने कहा प्रभु यह मैंने स्वीकार कर लिया परन्तु देखो विष्णु किसे कहते हैं? उन्होंने कहा विष्णु के बहुत से पर्यायवाची शब्द हैं। विष्णु के—मानो परमात्मा को विष्णु कहते हैं जो परमात्मा पालन करने वाला है। पालन करने वाला—जहाँ भी पालक का प्रसंग आएगा उसी का नाम विष्णु है। हमारे यहाँ पालना करने वाला परमात्मा उसका नाम विष्णु है। माता पालन करती है उसका नाम विष्णु है। मेरे प्यारे! देखो सूर्य पालन करता है उसका नाम भी विष्णु है। यज्ञोमयी विष्णु—जो यज्ञ हमारा पालन करता है। यज्ञ कहते हैं जितनी भी सुभावना हैं, सुकामना हैं। मेरे प्यारे! उससे सुपालना का अमृतम् पालना का एक वर्चसत्व ब्रव्हा वह साधना के मूल में विद्यमान रहता है तो उसका नाम विष्णु है। तो मेरे प्यारे! देखो हमारे यहाँ नाना प्रकार के पर्यायवाची शब्दों की विवेचना होती रहती है। मैं एक-एक शब्द की यदि विवेचना करने लगूँगा तो बहुत समय की आवश्यकता है। मैंने पूर्व कहा है तुम्हें मैं परिचय कराने के लिए आया हूँ।

अन्न

मेरे प्यारे! जब उन्होंने इस प्रकार वर्णन किया तो पिप्पलाद महाराजा की देवी ने कहा, शकुन्तका ने हे प्रभु जब मैं आचार्य कुल में अध्ययन करती थी तो मेरे आचार्य ने मुझे सब कुछ वर्णन कराया। मैं यह जानना और चाहती हूँ भगवन् जब यह वीरत्व और वीरांगनात्व नहीं होता तो यह परमाणुवाद कहाँ रहता है? उन्होंने कहा देवी मेरे पिता ने जब सृष्टि का सृजन किया, सृष्टि की संसार की रचना की तो उस समय मेरे पिता ने सात प्रकार के अन्न को उत्पन्न किया।

दो प्रकार का अन्न

सबसे प्रथम अन्नादम् भूतप्रव्हा एक ही पौधा है दो प्रकार का वह अन्न कहलाता है। दो प्रकार का अन्न है एक ही पौधे पर एक को मानव पान करता है और एक को पशु पान कर रहा है। मेरे प्यारे! देखो पशुपान करके दुग्धाहार कराता है, पय दे रहा है और मानव पान करके बेटा! ओज और तेज की उत्पत्ति कर रहा है। वाह रे मेरे प्रभु तू कितना रचनाकार है एक ही पौधे पर दो प्रकार का अन्न कहलाता है। हे माँ वसुन्धरा तेरे गर्भस्थल में मानो देखो कैसे-कैसे खाद्यान्न का जन्म हो रहा है और उसको एक मानव पान करता है ओज और तेज की उत्पत्ति कर रहा है। एक मेरी प्यारी माता अन्न को भोजनालय में तपा रही है एक को पशुपान करके मुनिवरो! देखो पय दे रहा है, दुग्ध दे रहा है अपने में अपनेपन को समाहित कर रहा है। मेरे प्यारे! देखो यह एक ही पौधा है और दो प्रकार का अन्न है एक प्राणी का अन्न, मानव का अन्न है यह सबका साझा अन्न कहलाता है।

तीसरा अन्न-हुत

तीसरा जो अन्न है उसको प्रहुत कहते हैं जहाँ यजमान अपनी यज्ञशाला में विद्यमान होकर के अग्नि को चरू प्रदान करता है और यह कहता है प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा कह करके समानाय स्वाहा कह करके बेटा! हुत कर रहा है जिससे बेटा! देखो अग्नि देवताओं का मुख है और अग्नि के मुखारबिन्दु में वह आहुति दे रहा है और वह जब साकल्य प्रदान करता है तो यह पृथ्वी नाना प्रकार के व्यञ्जनों वाली बन जाती है।

बलि

बेटा! मुझे अब एक आख्यिका अब स्मरण आ रही है। एक समय कहते हैं ऋषि-मुनियों का समाज एकत्रित हो करके याग के ऊपर विचार करने लगे। उन्होंने विचारा कि यह जो याग है इसको काला हिरण ले गया। जब काला हिरण ले गया तो उस हिरण ने, काले हिरण ने याग को वृत्रासुर को प्रदान कर दिया। जब वृत्रासुर ने मेरे प्यारे! अपने में उसे

धारण कर लिया, जब शचि को यह प्रतीत हुआ क्या वृत्रासुर याग को ले करके आ गये हैं वह दैत्य देवताओं की धरोहर को ले आए। यजमान से मानो देखो वह याग को ले करके अपने अपने में समाहित हो गया है तो मुनिवरो! देखो शचि इन्द्र के द्वारा पहुँची और इन्द्र से कहा हे इन्द्र देखो यह वृत्रासुर विनाश करो अपने वज्र को ले करके वह बेटा! देखो प्राण रूपी वज्र को लेकर के उस इन्द्र ने मुनिवरो! देखो वृत्रासुर का हनन किया और वृत्रासुर जब हनन हो गए तो उससे धीमी-धीमी वृष्टि हो गई। वहाँ बेटा! देखो गऊँ के बछड़े की बलि का वर्णन आया। वैदिक साहित्य में बेटा! देखो बलि का जो वर्णन आता है तो **बलि नाम बेटा! पुरुषार्थ का है,** बलि नाम किसी को हनन करने का नहीं है, मानो किसी के प्राणों को नष्ट करना नहीं है। बलि का अर्थ है मेरे प्यारे! देखो पुरुषार्थ करना। जब पुरुषार्थ से मुनिवरो! जब यह पृथ्वी में वृष्टि हो जाती है। वृत्रासुर कहते हैं मेघ मण्डलों को और शचि नाम विद्युत का है और इन्द्र नाम वायु का है मुनिवरो! देखो जब उससे वृष्टि होती है तो गऊ के बछड़ों को ले करके कृषक अपने पृथ्वी की चमड़ी को उधेड़ करके इसके मांस में बीज की स्थापना कर देता है। मेरे प्यारे! देखो यह बलि का अभिप्राय है, इसी से वाजपेयी याग का देखो व्यवधान का जन्म होता है। तो मेरे प्यारे! देखो वह गऊ के बछड़ों की बलि का अभिप्रायः नष्ट करना नहीं है। बलि का अभिप्रायः यह है क्या पुरुषार्थ करना। पुरुषार्थ से बेटा! अन्न को और द्रव्य को उत्पत्ति में लाना ही अपने में उत्पन्न करने का नाम मेरे प्यारे! देखो उसे पुरुषार्थ और बलि के नामों से वर्णन किया गया है। हनन करने का नाम बलि नहीं है, वो तो धूर्तता कहलाती है वह पामर व्यक्ति किया करते हैं इस अकारण कार्य को परन्तु देवत्व का जो बलि का अभिप्रायः है वह पुरुषार्थ है। जैसे प्रातःकाल से सायँकाल तक सूर्य अपनी ऊर्ज्वा देता रहता है तो वह ऊर्ज्वा कहते हैं बलम् ब्रव्हे व्रतम् वेद का शब्द आता है कि सूर्य अपनी किरणों की बलि देता रहता है, प्रकाश देता रहता है। चन्द्रमा रात्रि को अपने गर्भ में धारण करके इसको वृष्टिक रूप में अमृत देता रहता है। तो **अमृत को भी बलि कहा गया है** जो देता है, पुरुषार्थ करता है, जो

अपने में यह देखो निश्चयात्मक रहता है उसका नाम वृत्ति वृतम् बलि अवृताम् वह देने वाले का नाम बलि है। तो मेरे प्यारे! देखो अपने में धारयामि बनना है तो इसीलिए वेद के आचार्यों ने कहा है क्या हिरण नाम बेटा! धुन्ध का है, उनकी यज्ञ की तरंगों का है और तरंगों से देखो प्रदूषण समाप्त होता है और प्रदूषण जब नष्ट हो जाता है तो अमृतमयी बना देता है जगत् को। तो मेरे प्यारे! देखो जब इस प्रकार उन्होंने परमपिता परमात्मा ने, सृष्टि के पिता ने यह हुत मानो हुत तीसरा अन्न कहलाता है जो अग्नि के मुखारबिन्दु में प्रदान किया जाता है।

चौथा अन्न—प्रहुत

चौथा जो अन्न है वह प्रूहुत कहलाता है जहाँ बेटा! देखो पुरोहितजन होते हैं। राजा के राष्ट्र में, समाज में पुरोहित होने चाहिए। पुरोहित उसे कहते हैं जो पराविद्या को देने वाला है। **जो बेटा! आत्मा परमात्मा की विद्या को देता है वह पुरोहित कहलाता है।** आओ पुरोहितजनों तुम राष्ट्र और देखो समाज का कल्याण करो।

पुरोहित

बेटा! मैं जब त्रेता के काल में जाता हूँ और अपने उस काल की वार्ताएँ स्मरण आती हैं तो हृदय गद्गद हो जाता है। मेरे प्यारे! देखो महर्षि विश्वामित्र और महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज विद्यमान थे तो वशिष्ठ जी ने कहा हे विश्वामित्र मेरे विचार में यह आता है कि तुम दण्डक वनों में एक धनुर्याग करो। उन्होंने कहा बहुत प्रिय भगवन्। तो उन्होंने बेटा! उनकी आज्ञा पा करके, ब्रह्मचारियों को ले करके उन्होंने एक धनुर्याग का आयोजन किया। जहाँ मुनिवरो! देखो धनुर्याग उनका रच गया देखो ब्रह्मचारी अध्ययन करने लगे। तो मेरे प्यारे! उन्होंने कहा तुम्हारा याग सम्पन्न नहीं हुआ है? वशिष्ठ ने कहा जाओ तुम राजकुमारों से ही तुम्हारा याग सम्पन्न होगा। तो मेरे प्यारे! देखो महर्षि विश्वामित्र ने वहाँ से गमन किया और भ्रमण करते मुनिवरो! देखो वह अयोध्या में आ गए। जब अयोध्या में उनका आगमन हुआ, पदार्पण हुआ तो मुनिवरो! देखो विचारधारा एक बड़ी विचित्र बन गई समाज की। उन्होंने

कहा बिना समय के आज एक ब्रह्मवेत्ता का आगमन हुआ इसमें कोई कारण है। मेरे पुत्रो! वह भ्रमण करते मुझे ऐसा स्मरण है क्या वह राजा दशरथ के द्वार पर पहुँचे। राजा दशरथ ने आसन त्याग दिया और आश्चर्य से बोले हे प्रभु आज बिना सूचना के तुम्हारे आने का कारण क्या है? उन्होंने कहा राजन् तुम्हें प्रतीत है मैं दण्डक वनों में एक धनुर्याग कर रहा हूँ और मुझे राजकुमारों को प्रदान कीजिए। उन्होंने कहा प्रभु मैं राजा हूँ, मेरा कर्त्तव्य है तुम्हारे याग को सम्पन्न करने का, यह बाल्य तो किशोर हैं। उन्होंने कहा नहीं मुझे राजकुमार चाहिए। मेरे प्यारे! इतने में यह वार्ताएँ ही हो रही थी इतने में राजलक्ष्मियों का भी तांता बन गया कि ऋषि का आगमन हो रहा है। माता कौशल्या, कैकेई इत्यादियों ने उनके चरणों की वन्दना की और चरणों को स्पर्श करते हुए बोले कहो भगवन् आज बिना सूचना के आज राजस्थली पे आपका आगमन हुआ है हम कैसे दुर्भागी हैं। मेरे पुत्रो! देखो जब कौशल्या जी इत्यादियों ने यह कहा तो वह मौन हो गये। उन्होंने कहा कहो राजन् क्या चाहते हैं ऋषिवर? उन्होंने कहा कि यह राजकुमारों को चाहते हैं एक याग कर रहे हैं। उन्होंने कहा बहुत प्रिय तो राजकुमारों को प्रदान कर दो। राजा ने कहा देवियों मेरी इच्छा यह है क्या मैं इनके याग को पूर्ण कराऊँगा, मैं राजा हूँ, मेरा कर्त्तव्य है। माता कौशल्या ने कहा हे राजन् यदि हमारे गर्भ से उत्पन्न होने वाले पुत्र यदि एक ऋषि का धनुर्याग पूर्ण नहीं करा सकते तो हमारा गर्भाश्य दूषित हो जाएगा। मेरे प्यारे! देखो जब यह वाक् कहा तो राजा मौन हो गया और राजा ने चारों राजकुमार ऋषि को अर्पित कर दिये, जाओ तुम याग को सम्पन्न करो। मेरे प्यारे! देखो ऋषिवर बड़े प्रसन्न हुए। ऋषि ने कुछ अन्न इत्यादि का पान किया और पान करने के पश्चात् राजकुमारों को ले करके वहाँ से गमन करते हैं।

बेटा! मुझे स्मरण आता रहा है मैं कई समय मानो देखो उनके दीक्षान्त उपदेश में जाने का सौभाग्य प्राप्त होता रहा। तो बेटा! उनके यहाँ धनुर्याग होता था। धनुर्याग का अभिप्रायः है कि अस्त्रों शास्त्रों की विद्या महर्षि विश्वामित्र मानो देखो राजकुमारों को दिया करते थे। एक सौ इक्यासी ब्रह्मचारी बेटा! उस विश्वविद्यालय में अध्ययन करते थे। मेरे

प्यारे! देखो वह धर्नुविद्या समय-समय कहीं मेरे प्यारे! देखो भारद्वाज आ करके उनको उपदेश देते, कहीं धनुर्विद्या में नाना प्रकार के अस्त्रों शस्त्रों का निर्माण भी होता रहा। तो मेरे प्यारे! मुझे स्मरण आता रहा है कि बारह साल, बारह वर्षों में वह धर्नुयाग पूर्ण हुआ। तो बेटा! देखो वह ऋषि पुरोहित होते हैं और पुरोहित उसे कहते हैं जो राष्ट्र और समाज के कल्याण के लिए विचारता रहता है। **राष्ट्र और समाज का कल्याण करने वालों का नाम पुरोहित कहलाता है।**

मेरे प्यारे! देखो ऋषि ने कहा हे देवी तुम्हें प्रतीत हो गया है कि देखो एक पुरुहू देखो यह प्रहुत भी अन्न कहलाता है। अन्न का अभिप्रायः यह है जिससे समाज की तृप्ति होती हो उसका नाम अन्न कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो जो अन्न इत्यादि है उससे उदर की पूर्ति होती है और देखो **जो हुत करने वाले हैं उससे देवताजन प्रसन्न होते हैं और पृथ्वी यह नाना प्रकार के व्यञ्जनों वाली बनती है और पुरोहितजन अपना देखो ज्ञान का अन्न देते हैं समाज में पवित्रता आ जाती है, समाज में मानो देखो एक महान विचारों की क्रान्तियाँ आ जाती हैं।**

आत्मा का अन्न

मेरे प्यारे! देखो उन्होंने कहा यह चार प्रकार का अन्न है जो सबका साझा अन्न कहलाता है और तीन प्रकार का अन्न है जो मानो देखो अपने में आत्मा को जानने में लग जाता है। बेटा! मन, देखो मन, मन आत्माम् ब्रह्मे कृतम् देवत्वाम् लोकाम् बेटा! देखो मन, कर्म और विचार यह **मन, कर्म और विचार जिससे आत्मा पवित्र होता है यह भी बेटा! तीन प्रकार का अन्न है** जिससे देखो आध्यात्मिकवेत्ता अपनी आत्मा को तृप्त करते हैं, आत्मा को बलिष्ठ बनाते हैं जिससे मुनिवरो! देखो आत्मा मोक्ष का अधिकारी बनता है। **तो मेरे प्यारे! देखो सबसे प्रथम मन को पवित्र बनाना**—मन से विचार और देखो कर्म देखो यह तीनों ही एक सूत्र के अंग कहलाते हैं यह तीनों का साकल्य बनता है। मन कर्म और विचार का साकल्य बन करके जब बेटा! देखो ज्ञान रूपी

यज्ञशाला में स्वाहा कह करके जब आध्यात्मिकवेत्ता याग करता है तो बेटा! देखो वह परम पवित्रता को प्राप्त हो करके और आत्मवत् को प्राप्त हो जाता है।

यह है बेटा! देखो ऋषि ने कहा हे देवी तुम्हें यह प्रतीत हो गया होगा कि सृष्टि के पिता ने परमपिता परमात्मा ने यह सात प्रकार के अन्न को उत्पन्न किया है जिस अन्न के द्वारा हमारा जीवन पवित्र होता है, समाज महानता में परणित होता है।

परमाणुवाद अपने में अपनेपन को

मेरे प्यारे! देखो देवी मौन हो गई और देवी ने मौन हो करके कहा हे प्रभु में जानना चाहती हूँ जब यह सात प्रकार का अन्न नहीं था तो यह परमाणुवाद कहाँ रहता था? मेरे पुत्रो! देखो जब ऋषि ने कहा हे देवी यही परमाणुवाद मानो देखो यह अपने में अपनेपन को ही प्राप्त हो रहा है। हे देवी तुम्हें यह प्रतीत है इससे हमारे शरीर का निर्माण हुआ अमृतम् ब्रह्मा देखो जब यह आत्मा इस शरीर को त्याग देता है तो हे देवी आत्मा जब त्याग देता है तो अपने चित्त के मण्डलों का जो संस्कार होता है उसको ले करके यह सूक्ष्म शरीर इस शरीर से पृथक् हो जाता है। हे देवी देखो अमृतम् जब यह शव रह जाता है तो अग्नि अग्नि में प्रवेश हो जाता है जल जल में चला जाता है और देखो यह गुरुत्व पृथ्वी का भाग पृथ्वी में परणित हो जाता है और प्राण वायु में चला जाता है और अवकाश अन्तरिक्ष में चला जाता है और आत्मा अपने किए गए पाप पुण्य कर्मों का जो इसके द्वारा संस्कार होता है उसके अनुसार यह शरीरों को प्राप्त होता रहता है। तो हे देवी मैं जानना चाहता हूँ जब परमाणुवाद, जब यह मानो देखो पञ्च महाभूत भी समाप्त नहीं होता, आत्मा भी नष्ट नहीं होता तो मैं मृत्यु को जानना चाहता हूँ यह मृत्यु है क्या संसार में। मेरे प्यारे! शकुन्तका मौन हो गई और शकुन्तका ने ऋषि के चरणों को स्पर्श किया और यह कहा कि धन्य है प्रभु आपने मुझे अज्ञान से प्रकाश में पहुँचाया, आपको धन्य है। तो मेरे पुत्रो! देखो, उन्हें धन्य कह करके वह मौन हो गई।

मृत्यु की मृत्यु

परन्तु देखो ऋषि मौन हो करके बोले देवी मृत्यु भी होती है। उन्होंने कहा कि प्रभु वह क्या? कि एक समय राजा जनक की सभा में महात्मा अर्द्धभाग ने याज्ञवल्क्य मुनि से यह प्रश्न किया था क्या हे ऋषिवर मृत्यु की मृत्यु क्या है? तो उन्होंने कहा था हे अर्द्धभाग मत कहो कि मृत्यु की मृत्यु नहीं होती। अरे! मृत्यु की मृत्यु ब्रह्म है, परमात्मा है क्योंकि उस ब्रह्म को जो जानता है उसकी मृत्यु नहीं हुआ करती। ब्रह्म को जानने वाले की मृत्यु नहीं होती। परन्तु देखो इससे यह सिद्ध हुआ क्या जो परमात्मा को जानता है वह मृत्यु से रहित है, वह ज्ञानी है, वह अव्यय है मानो देखो जो परमात्मा को नहीं जानता वह मृत्यु को प्राप्त होता रहता है। तो मेरे प्यारे! देखो ऋषि ने अपनी देवी के प्रश्नों का उत्तर देते हुए—मैंने बेटा! यह संक्षिप्त तुम्हें यह परिचय दिया है मैं इसकी विवेचना किसी काल में करूँगा आज तो केवल मैंने तुम्हें इसकी विचारधारा प्रगट की है।

विचार केवल हमारा यह क्या मृत्यु बेटा! कोई मृत्यु नहीं होती क्योंकि अज्ञान का नाम मृत्यु है और **ज्ञान और विवेक का नाम ही बेटा! देखो जीवन माना गया है।** जहाँ मानो देखो इससे अव्यय बन जाता है, रहित हो जाता है वह बेटा! मृत्यु से पार हो जाता है। यमब्रह्म ब्रहे देवत्वाम् वह यमाचार्य की भाँति बन जाता है। जैसे यमाचार्य, मृत्यु को विजय करने वाले को यमाचार्य कहते हैं। इसी प्रकार मेरे प्यारे! देखो परमात्मा को जानने वाला ही मृत्यु को और मृत्यु से पार हो जाता है। जब मानव यह स्वीकार कर लेता है मैं प्रभु के राष्ट्र में विद्यमान हूँ, मेरे अंग संग प्रभु ही रहता है और मैं प्रभु के राष्ट्र में हूँ तो प्रभु के राष्ट्र में बेटा! रात्रि नहीं होती और जहाँ रात्रि नहीं होती वहाँ अन्धकार नहीं होता और जहाँ.....

शेष अनुपलब्ध

दिनांक : 24 जुलाई, 1992

स्थान : देवी मन्दिर, किठौर, मेरठ

।। ओ३म् ।।

सदाचार

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! अभी-अभी हमारा पर्ययण समय समाप्त हुआ। आज हम पुनः की भाँति कुछ वेदमन्त्रों का पाठ गा रहे थे। आज हम उन वेदमन्त्रों का पाठ कर रहे थे जो मानव जीवन के लिये एक महान आदेश देते चले आ रहे थे। आज हमें पुनः से उन वेदमन्त्रों पर विचार करना है, उस ज्ञान पर विचार करना है जो परमपिता परमात्मा ने सृष्टि के प्रारम्भ में मानव कल्याण के लिये दिया।

समर्पण

मेरे प्यारे ऋषि मण्डल! जाओ सब के (से) पूर्व उस प्रभु का गुणगान गाओ जो हमारा कल्याण करने वाला है। **मानव का कर्तव्य है कि वह प्रातः व साँय प्रभु का चिन्तन करे** और प्रभु से कहे प्रभु यह सब कुछ आपका है, मेरा नहीं। प्रभु मैं तो आपका सेवक बनना चाहता हूँ। मैं आपके इस रचाये हुए संसार में आया हूँ। मेरा कर्तव्य है कि मैं इस संसार की सेवा करूँ। मैं आपके उद्देश्यों का पालन करने आया हूँ उल्लंघन करने नहीं। विधाता यदि मैं आपके उद्देश्यों का उल्लंघन करूँगा तो मेरा जीवन समाप्त हो जायेगा"। तो मुनिवरो! सबसे पूर्व प्रभु को अपने को सौंपना है। "विधाता ले यह तेरा है। इसे तू अच्छा बना, पवित्र बना, महान बना और मानव बना।"

मुनिवरो! योग मार्ग पर सब से पूर्व मानव को अपने नाना अवगुणों को, नाना संकल्प विकल्पों, नाना समस्याओं को सबको विधाता को देना चाहिए। उस समय मानव निर्द्वन्द्व हो जाता है और प्रभु के समीप पहुँचने के लिये उस मार्ग को अपना लेता है जिस मार्ग पर चलकर हमारे ऋषि और मुनि संसार से पार हो जाते हैं।

आज यह कैसा अमूल्य समय है जिस अमूल्य समय में मेरा हृदय क्या-क्या पुकार रहा है। कौन-कौन सी योजनाएँ बना रहा है। इन नाना समस्याओं को विधाता को अर्पण कर दूँ। मेरा अन्तःकरण नाना अवगुणों से भरा हुआ है। "हे प्रभु! मैं आपको अपनाना चाहता हूँ। प्रभु जब आपने प्रेरणा ही नहीं दी तो मैं पाप ही पाप करता, शुभ कर्म कहाँ होता। प्रभु आज मैं आपकी प्रेरणा का इच्छुक हूँ। मुझे अपनी प्रेरणा दो। तू ही मुझे महान बना सकता है संसार में कोई नहीं।"

मुनिवरो! आज मानव कैसे अपने को सौंप सकता? मैंने एक समय संध्या का उपदेश दिया था और कहा था कि जहाँ भी मानव देखता है, जहाँ तक भी उस की दृष्टि जाती है वहाँ परमात्मा की अमूल्य महिमा को देखता है। सब जगह प्रभु प्रतीत होता है। वैराग्य उत्पन्न हो जाता है। पाप करूँगा तो परमात्मा सब जगह देखने वाला है। जब मनुष्य इस विचार पर पहुँचेगा तो उसके अवगुण समाप्त होने लगेंगे। उसकी आन्तरिक वृतियाँ स्थिर होकर गम्भीर हो जायेंगी और धारणा, ध्यान, समाधियों में लय होने लगेगा।

मुनिवरो! आज का मेरे प्यारे महानन्द जी का समय है। आज तो मुझे सूक्ष्म सा आदेश देना है। आज तो केवल प्रभु का गुणगान गाने आया हूँ। आज तो मेरे प्यारे महानन्द जी कुछ कहेंगे।

प्रभु से याचना

मुझे उच्चारण करना है कि "हे प्रभु! तू कल्याण करने वाला है। तूने ऋषि मुनियों का कल्याण किया है विधाता हमारा भी कल्याण कर। तू हमें भी यहाँ से ले चल जहाँ एक दूसरे की त्रुटि हों, एक दूसरे पर क्रोध नौछावर किया जाता हो। संसार मुझे नहीं चाहिए। मुझे तो वह कजली बन चाहिए जिस कजली वन में सिंह दहाड़ते हों जहाँ हाथी ध्वनियाँ कर रहे हों। जहाँ विधाता नाना सिंह ध्वनियाँ करते-करते उस अमूल्य आत्मा के द्वारा आकर वेदों को श्रवण करने वाले हों। आज के मानव से वह सिंह ऊँचे हैं जो ऋषि मुनियों की वार्त्ता को पान करते हैं।

आज का संसार

मुनिवरो! आज का मानव तो सिंह से भी परे है। यह वेद की वाणी को पान करता है परन्तु पान करके भी एक दूसरे को नष्ट करने की सोचता है। सिंह जब वेदमन्त्रों का पान करते थे तो वह ऋषि मुनियों के चरणों में ओत प्रोत होते थे। आज का संसार तो जैसा महानन्द जी से ज्ञात हुआ है एक दूसरे की समालोचना, एक दूसरे की निन्दा और एक दूसरे पर क्रोध नौछावर करने वाला है।

योग में जाने की प्रेरणा

मेरे पूज्यपाद गुरूजी ने मुझे एक वाक्य कहा था वह मुझे अब तक कण्ठ है कि हे बेटा! यदि तुम्हें अपने जीवन को ऊँचा बनाना है और अपनी मानवता को जानना है तो मानव से दूर जा। तू उन सिंह में चल जिनकी उदर पूर्ति भोग योनि है। वह तेरी वेद वाणी को पान करेंगे। तेरे चरणों में ओत-प्रोत होंगे। आज तू वैराग्य की स्थिति को उत्पन्न कर। वैराग्य कब आता है? जब मनुष्य विचारता है कि विधाता ने यह क्या संसार रचा है। यह विधाता कितना अमूल्य और पवित्र है, कितना महान है, ऋषि मुनियों को प्रेरणा देता है। परमात्मा की अमूल्य सृष्टि को जान करके और उस पर गम्भीरता से विचार करते-करते मानव उस स्थिति पर पहुँच जाता है जहाँ मुनिवरो! हमारे आदि ऋषि पहुँच चुके हैं। महाराजा सनत् कुमार ने नारद मुनि से यह ही कहा था 'हे नारद! आज तुम्हें योग में जाना है। अपने जीवन को प्रभावशाली बनाना है। अपने जीवन की महत्त्वता को ऊँचा बनाना है जिससे तुम्हारी योग में प्रवृत्ति हो जाये। **''प्रत्येक इन्द्रिय पर शासन करना हमारा योग है।"** जिस समय प्रत्येक इन्द्रिय पर शासन हो जायेगा उस समय हमारे द्वारा सब कुछ आ जायेगा, हमारा जीवन अमूल्य हो जायेगा।

अब मेरा यह आदेश समाप्त हो रहा है। अब मेरे प्यारे महानन्द जी अपने उदार वाक्य इस महान यज्ञ वेदी पर उच्चारण करेंगे। अपनी कुछ अमृतधारा बरसाएंगे जैसे गंगा की धारा शीतल है, मेरे प्यारे

महानन्द जी का शीतल प्रवचन होगा। मेरे महानन्द जी के द्वारा मानव की नाना समस्याओं की एक पोथी है उस पोथी को पुनः से खोलना चाहते हैं। अब मैं महानन्द जी से प्रार्थना करूँगा कि वह आयें और महान अमूल्य वेदी पर अपने उदार वाक्यों को उच्चारण करके हमें भी, ऋषि मण्डल को भी और हमारी वाणी मृत लोकों तक जा रही है उन सबको भी उदार करें।

पूज्य महर्षि महानन्द मुनि जी के उद्‌गार

हास्य...आज तो मेरे पूज्यपाद ने मेरे उच्चारण करने से पूर्व ही यह अमूल्य समय दिया। मैं हर समय कितना आभारी बना रहता हूँ अपने पूज्यपाद गुरुदेव का।

"मम् गुरु अस्चति सुप्रजा मानः अस्ति सुधृता नरोति कामः।"

यह गुरुजन संसार में कितने दयालु होते हैं। आज मुझे यह अमूल्य समय मेरे पूज्य गुरुदेव ने कुछ समय पश्चात् दिया। आज इस अमूल्य समय में मैं कुछ उच्चारण करता चला जाऊँ। आज मेरा विषय है "सदाचार"।

आज मैं सूक्ष्म-शरीर द्वारा इस यज्ञशाला में भ्रमण कर रहा था। जहाँ इस यज्ञशाला अप्रति भूषणम् त्वा आस्ता यज्ञो बेरी नामः अस्ते। आज का प्रत्येक बुद्धिमान मण्डल और प्रत्येक साधु मण्डल सदाचार को पुकार रहा है। मैंने आज से पूर्वकाल में कहा था और मेरे गुरुदेव भी कहा करते हैं कि जब तक वक्ता स्वयं ही सदाचारी नहीं बनेगा तो यह संसार सदाचारी नहीं बनेगा। मैंने आज से पूर्व कहा था कि आज के बुद्धिमान मण्डल को, आज के संन्यास आश्रम वालों को राजा से जाकर कहना चाहिए कि हे राजा तेरे राष्ट्र में सबसे अमूल्य वस्तु की सूक्ष्मता है और वह है "सदाचार"। आज तू अपने राष्ट्र में उन वस्तुओं को न रहने दे जिससे दुराचार आये।

सदाचार का स्रोत

अपने गुरु की आज्ञानुसार यह भी उच्चारण करता चला जाऊँ

कि यह सदाचार कहाँ से आया है। अहा! जब यह सदाचार संसार में आया तो सदाचार ने ब्रह्म से कहा था "विधाता! संसार में मुझे ओत प्रोत न करो। यह संसार मेरी आड़ में ऐसा विचित्र बन जायेगा कि यह सदाचार-सदाचार पुकारेगा परन्तु मुझे भ्रष्ट करता चला जायेगा। मैं इस महान व्याकुल संसार में जाना नहीं चाहता।" तब ब्रह्मा ने कहा "अरे! तुम्हें तो संसार में जाना है। यदि तुम किसी भी मनुष्य को सदाचारी बना दोगे तो उसका जीवन संसार में अमूल्य बन जायेगा।" हे मेरे प्यारे मानव समाज! यह सदाचार ब्रह्मा के कमण्डल में से आया था। यह ब्रह्मा के कमण्डल में पवित्र था और वह सदाचार हमेशा पवित्र रहेगा। किसी काल में भी यह क्षीण नहीं होता नवीन रहता है। कदापि शान्त नहीं होता। आज तो मानव सदाचार को नहीं अपना रहा है। वह मानव ही समाप्त हो जायेगा परन्तु सदाचार समाप्त न होगा।

हे मेरे पूज्य गुरुदेव! मैं आज के संसार की स्थिति को देखा करता हूँ। आज जो सदाचार का वक्तव्य देने वाले हैं वह भ्रष्टाचारी हैं। यहाँ क्यों न संसार में भ्रष्टाचार का प्रचार होगा।

विद्वत मण्डल को प्रेरणा

आज मैं अपने महान विद्वत मण्डल से कहूँगा कि आज तुम्हें पुनः से सदाचारी बन जाना है। जब तुम सदाचारी बन जाओगे उस समय तुम्हारी आत्मा की आकाशवाणी से यह संसार सदाचारी बन जायेगा। यहाँ देखो आर्यों से, ब्राह्मणों से और साधु मण्डल से राष्ट्र पवित्र बनता है, राष्ट्र का कल्याण होता है। आज मुझे बड़ा खेद आ रहा है आज सबसे पूर्व अपने को अपनाना है। अपने को विचित्र बना लेना है।

आज तुम सदाचारी बनोगे कैसे?

आज तुम जिस वाणी का वक्तव्य दे रहे हो उस वाणी को एकान्त स्थान में विराजमान हो करके विचारो कि जो वक्तव्य हमने दिया है इसका क्या तात्पर्य है? जिस वक्तव्य को हम दे रहे हैं उस पर चलने वाले हैं या नहीं। आज यदि हम चलने वाले हैं तो उस वक्तव्य को देने के अधिकारी हैं और उसका प्रभाव होगा। यदि हम नहीं हैं और

हमारे द्वारा नाना त्रुटियाँ हैं सदाचार के सम्बन्ध में और सदाचार का वक्तव्य देते चले जा रहे हैं तो प्रजा के ऊपर कोई प्रभाव न होगा।

आज मुझे बहुत प्राचीन समय की वार्त्ता कण्ठ होती चली जा रही है। यहाँ देखो याज्ञवल्क्य मुनि महाराज आए। बहुत सूक्ष्म सी तपस्या की। सदाचार का प्रसार करने इस संसार में आए परन्तु उनका कोई प्रभाव न हुआ। याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने क्या किया? पर्वतों की कन्दराओं में जाकर, उन गुफाओं में जाकर तपस्या की जहाँ मानव का जीवन उज्ज्वल और पवित्र बन जाता है, प्रकाशवान बन जाता है। प्रकाशवान बन करके जब द्वितीय संसार क्षेत्र में आए तो राजा जनक जैसों को सदाचारी बना दिया। राजा जनक ने अपने राष्ट्र में ओ३म् की, वेद की पताका लहराई।

आज देखो! तुम सबको याज्ञवल्क्य बनना है। याज्ञवल्क्य मुनि महाराज अपनी तपस्या में संलग्न हो गए और सदाचार को अपनाने लगे तो नित्य प्रति सबसे पूर्व अपने को परमात्मा के अर्पण कर देते थे। मेरे पूज्यवाद गुरुदेव अभी-अभी उच्चारण कर रहे थे कि सबसे पूर्व मानव को परमात्मा के अर्पण करना है—**जब मानव अपने को अर्पण कर देता है तो उसका आत्मा निर्मल और पवित्र हो जाता है। धारणा-ध्यान-समाधियों में लय हो जाता है।** इसके पश्चात् जब वह अपने ज्ञान का प्रसार करता है तो मानव समाज सदाचारी बन जाता है। आज सदाचारी बनाने से पूर्व अपने को सदाचारी बनाना है।

आज यहाँ द्रव्य की पूजा करने से सदाचारी नहीं होंगे। आज तुम द्रव्य के लिए स्थान-स्थान पर वक्तव्य देने से सदाचार नहीं बनेगा। **आज सदाचार त्याग तपस्या से आएगा। आज तपस्या करो माँ गायत्री की गोद में जाकर मग्न हो जाओ।** जैसे माता का बालक पूर्व माता की गोद में जाकर आनन्द मनाता है, विनोद करता है और माता उसे चूमने लगती है। इसी प्रकार जब तुम सदाचार की लहरों में जाओगे, माँ गायत्री की गोद में जाओगे तो माँ गायत्री तुम्हें चूमने लगेगी। संसार में जाओगे तो संसार तुम्हारे वाक्यों को चूमेगा जैसे माता अपने पुत्र

को चूमा करती है। आज तुम्हें वह नहीं बनना है कि तुम्हारे वाक्यों से दुनिया दूर चली जाए।

मैंने आज से पूर्व कहा था कि मेरे पूज्यपाद गुरुदेव के द्वारा हमारी आकाशवाणी मृत मण्डल में जा रही है। यहाँ वेद के विषय में नाना प्रकार के वक्तव्य हैं मुझे समय मिले तो सब ही कुछ उच्चारण कर सकता हूँ परन्तु मेरे गुरुदेव मुझे समय नहीं देते। इसका सबसे मुख्य कारण यह है कि मेरे पूज्यपाद गुरुदेव यह कहा करते थे कि भोग मेरा है। मैं अपने भोग को किसी को देना नहीं चाहता। मैं अवश्य यह उच्चारण करता चला जाऊँ कि यह वह भूमि है जहाँ परमात्मा ने, ब्रह्मा ने उस सदाचार को भेजा और संसार से कहा कि तुम इसमें ओत प्रोत हो जाओ। संसार तुम्हें अवश्य अपनायेगा। तुम निर्द्वन्द्व हो। यदि नहीं अपनाएगा तो मानव अपना ही कुछ शान्त कर देता है तुम्हारा कोई दोष नहीं। आज मानव को सदाचार अपनाना है।

सदाचार वह वस्तु है जिससे महाराजा ध्रुव ने ध्रुव लोक को पा लिया था। ध्रुव ने माता सुरुची के आदेश को पान करते हुए विष्णु को पाया और विष्णु को पा करके वह ध्रुव मण्डल में जाने वाला बन गया। आज तुम्हें ध्रुव बनना है।

मुझे अपने गुरुओं के चरणों में विद्या पाने का अवसर मिला। **मेरे गुरुदेव ने इन्द्रियों पर शासन करा करके आज मुझे इस स्थिति पर पहुँचा दिया कि आज सूक्ष्म शरीर द्वारा इस संसार को देखा करता हूँ।** मैं आज के आर्य मण्डल को देखा करता हूँ और बड़ा आश्चर्य करता हूँ कि पूर्व का आर्य मण्डल कैसा था और आज का आर्य मण्डल कैसा है। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने बहुत से वाक्य उच्चारण किए। मैं अपने गुरुदेव के समक्ष आज ऐसे जैसे सूर्य के समक्ष दीपक।

वेदना

मेरे गुरुदेव वह सूर्य हैं जिनकी वेदवाणी को कजली वन में सिंह भी आकर पान किया करते थे। आज मेरे गुरुदेव का वह आभागा समय है कि आज के संसार का व्यक्ति इन वेद मन्त्रों को कहता है यह

पाखण्ड है। उस वेद वाणी पर और आज की वेद वाणी पर विचार करो यह क्या है? आज देखने से पूर्व मानव अपने को भूल बैठा है। यहाँ द्रव्य का पुजारी बन करके मानव मानव को समाप्त करने के लिए उद्धत हो रहा है। आज मानव को समाप्त नहीं करना। मानव के ऊपर दया करनी है। आज तुम्हें योग में पहुँचना है, गम्भीरता में पहुँचना है। ध्रुव बनना है। सुरुची जैसी माता को ढूँढ़ना है। आज वक्तव्य देने वाले सब ही से प्रार्थना किया करता हूँ और नम्रता से कहा करता हूँ कि यथार्थता में कटुता होती है। मेरे द्वारा मेरे पूज्यपाद गुरुदेव मुझे कई स्थानों में मधु उच्चारण का आदेश दिया करते हैं। परन्तु मैं क्या करूँ। जब संसार की स्थिति देखता हूँ तो नेत्रों में जल आ जाता है। विचारता हूँ और पुकारता हूँ "अरे संसार! तू कहाँ चला गया? अरे आर्य मण्डल! तू कहाँ चला गया? अरे ऋषि मुनियों की सन्तान! तू कहाँ चली गई है?"

तुम अपने पथ से बहुत दूर चले गये हो। ऋषि मुनि दूसरे जीवों की रक्षा करते थे। आज वही ऋषियों की सन्तान दूसरे जीवों का भक्षण करने लगी है। आज मुझे आश्चर्य आता है। संसार को देखकर रोष आता है। बारम्बार व्याकुल ही होना पड़ता है और कुछ नहीं सुहाता। मैंने आज से पूर्व लगभग एक वर्ष हो गया कहा था कि जिन पर्वतों की कन्दराओं पर ओ३म्, की वेद की पताका लहराई थी आज स्वार्थी संसार ने रक्त की धारा बहाई है। क्या इसी का नाम सदाचार है? इसको तो रक्त का चार कहना चाहिए।

मैं विद्वत मण्डल से प्रार्थना करूँगा कि सदाचार के वक्तव्य देने से पूर्व तुम्हें सदाचारी बन जाना है। जब तक यहाँ वक्तव्य देने वाला सदाचारी, ओजस्वी नहीं होगा तब तक यह संसार सदाचारी नहीं बनेगा।

ओजस्वी का दर्शन

आज ब्रह्मचर्य को पुकारता चला जा रहा है संसार परन्तु यह नहीं जानता कि ब्रह्मचर्य है क्या? मैं देखा करता हूँ कि विद्वत मण्डल ब्रह्मचर्य

का उपदेश देते हैं उनके अन्तःकरण को देखा जाता है तो वह एक मिट्टी का पुतला है। आज मिट्टी का पुतला नहीं बनना। आज तुम्हें ब्रह्मचर्य से ओजस्वी बनना है। इसमें अमृत भरना है इसमें वह ज्ञान और आत्मबल भरना है जो देखो हमें सूर्य लोक तथा नाना लोक लोकान्तरों तक पहुँचा सकता है। आज हमें ओजस्वी बन करके अपने जीवन का कल्याण करना है। अपने जीवन का कल्याण करके जब संसार में आओगे तो संसार ऊँचा बन जाएगा।

मुझे इस संसार की वार्त्ता कण्ठ होती चली आ रही है। यहाँ कैसे-कैसे महान आत्माओं ने आकर प्रचार किया है। मैं आधुनिक काल की एक वार्त्ता प्रकट करना चाहता हूँ। वह यह कि जब यहाँ महात्मा शंकराचार्य आए तो उन्होंने ब्रह्मचर्य को अपनाया। ब्रह्मचर्य को अपना करके वेद की पताका और सदाचार की पताका को लेकर चले। उन्होंने नाना व्यक्तियों को सदाचारी बना दिया था। आज वह कहाँ हैं? उनके आदेश को संसार ने ऐसा कर दिया जैसे उनका आदेश कुछ था ही नहीं। मैं यह नहीं कहना चाहता कि यहाँ संसार में सदाचारी नहीं, है परन्तु सूक्ष्म।

मुझे एक वाक्य और कण्ठ आ गया महात्मा दयानन्द का। यहाँ महात्मा दयानन्द ही दयानन्द पुकारा जा रहा है। आज तुम भी तो दयानन्द बन कर देखो। तुम भी तो किसी पर दया करके देखो। आज तुम दयानन्द के चित्र को अपने गृह में स्थापन करते हो। परन्तु तुम वह दया की मूर्ति नहीं बनना चाहते। आज दयानन्द को पुकारने से तुम्हारा कल्याण न होगा जब तक तुम स्वयँ दयानन्द न बनोगे। जब तक तुम स्वयँ ब्रह्मचारी नहीं बनोगे। उस दयानन्द ने अपने को ब्रह्मचर्य में रमण कर दिया था। उसने योग रूपी बेला में रमण किया था। उसने वेद को अपनाया जिस वेद को अपनाने से इस संसार का कल्याण होता है। अरे! वह तो संसार में अपना कल्याण करके ले गये। परन्तु तुमने उनके आदेशों को भ्रष्ट कर दिया। आज तुम उनके आदेशों को लेकर चलो। उन्हें ब्रह्मचर्य में कितना आनन्द आया, तुम भी ब्रह्मचारी बन

करके देखो। यहाँ तो स्वपन में भी नहीं रहा जाता। यह तो संसार है। क्या इसी वक्तव्य देने वाले को सदाचारी कहेंगे? अरे! सबसे पूर्व वक्तव्य देने वाला ही सदाचारी नहीं तो वह संसार को कैसे सदाचारी बना सकता है।

आज मेरे गुरुदेव ने मुझे समय दिया। आज मैं यज्ञ के सम्बन्ध में कुछ कहना चाहता था परन्तु क्या करूँ सदाचार से ही अवसर नहीं मिल रहा है। आज तुम्हारा सदाचार कैसे बनेगा?

माताओं का मार्गदर्शन

सबसे पूर्व मैं अपनी माताओं से प्रार्थना कर रहा हूँ। "हे मेरी प्यारी माता! यदि तू संसार को ऊँचा बनाना चाहती है और संसार को ऊँचा बनाना है तो हे मेरी माता! तुझे अपने गर्भस्थल की रक्षा करनी होगी। जैसे ब्रह्मचारी अपने ब्रह्मचर्य की रक्षा करता है और उससे उदारता में रहता हुआ अपने स्थान पर स्थिर रहता है। ऐसे ही हे माता! जब गर्भवती हो जाए तब तुझे गर्भस्थल की रक्षा करनी पड़ेगी। गर्भ स्थिति होते ही तुझे प्रभु चिन्तन करना है। अपने आहार व्यवहार को पवित्र बनाना है आज तुझे कोई हिंसक और तीक्ष्ण पदार्थ पान नहीं करना है। माता तुझे क्रोध नहीं करना है और मग्न रहना है। यदि तू मग्न रहेगी तो तेरे गर्भस्थल से जो बालक उत्पन्न होगा वह मग्न होगा। जहाँ भी जायेगा ब्रह्मचारी रहेगा। माता यदि वह नग्न में भी चला जायेगा तो वह वहाँ भी ब्रह्मचारी रहेगा।

मुझे ब्रह्मचारियों का एक आदेश कण्ठ आ गया है सुनो! महर्षि व्यास के पुत्र राजा जनक के द्वारा पहुँचे तो उस परम हंस को नग्न देव कन्याओं में स्थान दिया। रात्रि के समय उसने देखा कि यहाँ तो तेरे लिए नष्ट करने वाले वज्र तेरे समक्ष आते चले जा रहे हैं। जब उसने यह देखा तो वह उस परमात्मा का चिन्तन करने लगा और देखता रहा कि तू इस मृत्यु आंगन से किस काल में बचेगा। कब प्रातःकाल होगा, कब तू इस स्थान से बाहर होगा, कब तू इस मृत्यु से बचेगा।

देखो, आज संसार में वह ब्रह्मचारी बनते हैं जो मृत्यु पर विजय पाने वाले होते हैं। काम, क्रोध, मद, लोभ और मोह को जो मृत्यु समझते हैं वह यहाँ पर ब्रह्मचारी बनते हैं। जो यहाँ मग्न होकर कार्य करता है वह ब्रह्मचारी बनता है, उदार और पवित्र बनता है।

हे मेरी प्यारी माता! तू अपने पुत्र को अपने गर्भस्थल में ऊँचा बना। ब्रह्मचर्य से पौष्टिक बना। आज तू अपने विचारों से उसे पौष्टिक बना। अपनी ज्ञान गंगा से स्नान करा करके उसे पवित्र बना। हे मेरी प्यारी माता! जब तेरा बालक गर्भस्थल से पृथक हो पृथ्वी माता की गोद में आ जाए उस समय तू पृथ्वी की याचना कर कि हे पृथ्वी माता! अब तक मैं माता रही। अब हे माता! तू इस बालक को सदाचारी बना! जब हे माता बालक को आचार्य के द्वारा प्रविष्ट कराये तो आचार्य से कहे "हे मेरे आचार्य! हे मेरे गुरुदेव! यह बालक आज तेरा पुत्र है अब यह बालक मेरा नहीं रहा है। यह तेरा है। आज तू इसे चाहे ब्रह्मचारी बना दे या विभिचारी (व्यभिचारी) बना दे, इसको सदाचारी या दुराचारी बना दे। यह बालक तेरा है। यह गुरु ब्रह्मचारी उस बालक को अपने हृदय में धारण कर लेता है। बालक से कहता है अपनी त्रुटियाँ तू मुझे दे परन्तु तू पवित्र बन। वह बालक संसार में क्यों न सदाचारी बनेगा क्यों न उसकी उदारता पवित्र होगी। उसका ज्ञान भी पवित्र होगा। संसार में क्यों न उसका सूर्य जैसा प्रकाश होगा। हे मेरी माताओं! आज तुम्हें अपने प्यारे पुत्र को संसार में ऊँचा बनाना है।

हे मेरे आचार्यों! हे मेरे गुरुजनों! मैं यह बालक चाहता हूँ जैसे मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे शिक्षा दी थी और आज मेरी यह स्थिति है। मैंने अपने गुरुदेव के चरणों में ओत-प्रोत हो करके उनके चरणों की धूलि को अपनी रसना में आनन्द ले करके उस स्थिति को पान किया है।

राजा का कर्त्तव्य

आज यदि संसार सदाचारी बनना चाहता है तो सबसे पूर्व मेरी

माताओं को सदाचारी बनना है। राष्ट्र के राजाओं को चाहिए कि वह अपने राष्ट्र को सदाचारी बनाने में तत्पर रहे। राष्ट्र का सबसे बड़ा भूषण सदाचार है। राष्ट्र का भूषण मेरी प्यारी माताओं को नचाने का नाम नहीं। यह राजा का भूषण नहीं। यहाँ कलाओं का नाम सदाचार नहीं। राजा का भूषण हिंसा करना नहीं। राजा को सदाचारी बन करके ब्राह्मणों से कहने वाला होना चाहिए कि हे ब्राह्मणों! तुम सदाचारी बन करके राष्ट्र को सदाचारी और पवित्र बनाओ। वह उस काल में था जब यहाँ महाराजा हरिश्चन्द्र की पताका लहराती थी।

महाराजा हरिश्चन्द्र ने अपने पुरोहितों से कहा कि मेरे राष्ट्र में सदाचार होना चाहिए। मैं दुराचार नहीं चाहता। मैं यज्ञ करता हूँ मेरे राष्ट्र में कोई दुराचारी न हो। यहाँ एक नहीं नाना राजाओं का आदेश रहा है। भगवान् राम देखो गुरु से शिक्षा पाकर के आर्य बने और आर्य बन करके सदाचार को अपनाया और कहा करते थे कि आज मेरे राष्ट्र में एक दूसरे की हिंसा की जाती हो, एक दूसरे जीवों को कष्ट दिया जाता हो तो मेरा राष्ट्र सदाचारी और राम राज्य नहीं बनेगा। यहाँ देखो एक नहीं—जब राजा रघु ने सर्वस्य यज्ञ किया था, राष्ट्र की सर्वांग सम्पन्नता यज्ञ में लगा दी थी तो राजा रघु ने यह कहा था कि मेरे राष्ट्र के लिए यज्ञ करना अनिवार्य है। आज जब मैं यज्ञ के भूषण को लेकर चलूँगा तो प्रजा इस भूषण को अपनाएगी और अपनाकर के सदाचारी बनेगी। राष्ट्र का भूषण सदाचार है। मानव का भूषण है सदाचार। मेरी माताओं का गर्भस्थल है सदाचार।

सिंह को अपनाये

आज मानव को विचारना है, आज हम कहाँ पहुँच गये हैं? आज जिस भूमि को भारत वर्ष पुकारा जा रहा है यह वह भारत-भूमि है जहाँ वह सदाचारी बालक भरत सिंह के प्यारे पुत्रों से मग्न हुआ करता था। उनको गोद में धारण किया करता था। आज का मानव उसी भारतवर्ष में रहने वाला ऐसा है कि एक दूसरे का घातक है। एक दूसरे मानव

को नष्ट करना चाहता है। सिंह को नहीं अपनाना चाहते जिसको अपनाने से हम निर्भय हो जायें। आज वह सिंह क्या है हमारे द्वारा?

वह सिंह हमारा ज्ञान है। जिसको अपनाने से हम निर्भय हो जाते हैं। आज सिंह हमारे द्वारा आ जाये, शत्रु आ जाये परन्तु हम उस पर विजय पा सकेंगे। परन्तु उस सिंह का अपनाना है।

मानवीय जीवन

हमें यह नहीं देखना है कि यह भूमि आर्यों की थी, यह भारत भूमि सदाचारियों की थी परन्तु तुम भी कुछ बनोगे या नहीं। या उच्चारण करने वाले ही बनोगे। **आज तुम उच्चारण करने वाले न बनो। आज करने वाले बनो।** आज तुम माता के गर्भ में ही अपने जीवन को ऊँचा बना लो। यहाँ नाना प्रकार के गर्भों को पान किया जाता है नाना जीवों की हिंसा कर आज सदाचार को पुकारता है तो सदाचार को अपनाना असम्भव है यहाँ कदापि भी सदाचार न आएगा संसार में। आज यहाँ सदाचार को अपनाने वाले व्यक्तियों! तुम्हें अपने आहार को इतना विचित्र बनाना है कि तुम्हारी कामवासनायें प्रज्ज्वलित न हो जायें। जैसे अग्नि में घृत देने से अग्नि प्रज्ज्वलित होती है ऐसे ही तुम इन आहारों को कर कामवासनाओं को प्रज्ज्वलित करते हो। आज जो जीव तुम्हें सुख देने वाले थे उन जीवों को, उनके प्यारे पुत्रों को तुम भक्षण करने लगे। आज यह ऐसा है जैसा अग्नि में घृत। जहाँ तुम्हारी कामवासना ऊँची है वहाँ तुम सदाचारी बनना चाहते हो तो कदापि न बनोगे।

आज सदाचार को अपनाना है तो सबसे पूर्व वेद के आदेश और वेद की पताका के नीचे आ जाना है। आज प्रत्येक मानव कहता है कि हम गृहस्थ में कैसे ब्रह्मचारी बन सकते हैं। आज तुम गृहस्थ जीवन में ब्रह्मचारी न बनोगे तो बनोगे किस काल में? **गृहस्थ जीवन में तुम्हारा ब्रह्मचारी बन जाना अनिवार्य है।** आज ऋतु काल में देखो हे मानव! तू यदि ऋतु काल को नहीं देखता तो मेरे से ऊँचे तो यह

पक्षी है जो भोग योनि में है। आज तेरी कर्मयोनि से कोई लाभ नहीं संसार में। तेरे मानव जीवन से इस पृथ्वी को लाभ नहीं मानो पृथ्वी पर तेरा एक भार है। तू आज पृथ्वी को दूषित करने आया है। यदि तूने ऋतु काल को नहीं जाना गृहस्थ में रह करके जिसको ऋषि मुनियों ने अपनाया था। ऋषि मुनि तुम्हें आदेश देकर चले गये हैं। आज यदि हे मानव! तूने अपने ऋतु काल को नहीं अपनाया तो तुझ से तो अच्छे यह कुत्ते हैं जो अपने ऋतु काल को जानकर उसके अनुकूल कार्य करते हैं। परमात्मा ने इन्हें ऋतु का ज्ञान दिया है। आज तुझे ज्ञान दिया है तू इतना मूर्ख बन गया है कि पृथ्वी पर तेरा एक भार हो गया है।

आज यह देवता देख रहे हैं कि पृथ्वी पर तुम्हारा इस प्रकार का भार है। आज तुम अपने कर्त्तव्य का पालन करने वाले बनो। सदाचारी और ब्रह्मचारी बनकर के चलो। तो यह था आज का मेरा आदेश। अब मैं अपने गुरुदेव से प्रार्थना करूँगा। मुझे केवल इतना ही समय मिला था। कल समय देंगे तो यज्ञ के सम्बन्ध में कुछ कहूँगा।

हास्य के साथ...बेटा! तुम्हें समय देकर कोई करे भी क्या? अब तुमने जितने वाक्य कहे हैं सब ऐसे हैं जो कोई बुद्धिमान पान करने लगे तो तुम्हें मूर्ख ही कहेगा।

पूज्य महानन्द जी — प्रभु! यह वाक्य तो मैं पूर्व ही कह चुका हूँ कि जितना भी मैं मूर्ख बनूँगा उतना ही मेरा कल्याण होगा। यदि संसार भी अपने को मूर्ख जानने लगे तो इसका भी कल्याण हो जाये। यह अपने को बहुत बुद्धिमान माने बैठा है। क्या करें जब यह अपने को बुद्धिमान मान बैठा है तो इतना दुराचारी बन गया। तो भगवन्! यदि आप मुझे दुराचारी बनाना चाहते हैं तो आप मुझे बुद्धिमान कहने लगें। मैं दुराचारी बनना नहीं चाहता। मैं तो संसार में मूर्ख ही बनना चाहता हूँ। जितना मैं मूर्ख बनूँगा उतना मेरा कल्याण होगा। हास्य के साथ... तो प्रभु अब मुझे आज्ञा दीजिए।

पूज्यपाद-गुरुदेव

धन्यवाद!

आज मेरे प्यारे महानन्द जी ने एक अमृतमय आदेश दिया है। इनके आदेशों के उच्चारण करने में कटुता तो थी परन्तु आदेश विचित्र, हृदय से, व्याकुलता से और वैराग्य से है। बहुत ही ऊँचा। कल महानन्द जी को द्वितीय भी समय दिया जाएगा और कल यह यज्ञ के सम्बन्ध में कुछ निर्णय देंगे। आज इन्होंने केवल सदाचार के ऊपर वाक्य उच्चारण किये। सबसे पूर्व मेरी प्यारी माताओं को ऊँचा आदेश दिया है। सबसे ऊँचा इनका एक ही वक्तव्य था कि वक्तव्य देने वाले को सदाचारी बन जाना चाहिए। ब्रह्मचारी बन जाना चाहिए। कल महानन्द जी के दो विषय होंगे यज्ञ का और ब्राह्मण का। मेरे प्यारे महानन्द जी के वाक्यों में कटुता अवश्य होती है। परन्तु महानन्द जी से मैं यह अवश्य कहूँगा कि कल कोई कटु वाक्य नहीं कहेंगे। **कटुता उच्चारण करने में मानव और संसार को कष्ट होता है। यथार्थ भी हो परन्तु मधु हो।**

पूज्य महानन्द जी — हास्य के साथ...भगवन्! आप फिर यह कहेंगे कि विनोद की बात प्रकट कर रहे हैं। परन्तु भगवन्! कटुता तो मेरे वाक्य में अवश्य ही हो जाती है।

हास्य के साथ...अच्छा!

अब हमारा यह आदेश समाप्त हो गया है। कल समय मिलेगा तो शेष वाक्य कल होंगे। मेरे महानन्द जी का कल और भी ऊँचा आदेश होगा। मैं प्रभु की याचना करने जाऊँगा महानन्द जी उसका विस्तार करेंगे। अब समय समाप्त हो गया है। अब वेदों का पाठ होगा इसके पश्चात् वार्ता समाप्त हो जायेगी।

दिनांक : 9 नवम्बर, 1963
समय : रात्रि 9 बजे
स्थान : यज्ञ पण्डाल, सरोजिनी नगर, नई-दिल्ली

।। ओ३म् ।।

ऋषियों के उद्गार

1. यहाँ ऊँचे कर्म किए जाएँ जिससे आज यह प्रकृति तुम्हारे अधीन हो करके तुम्हारी इच्छानुसार फल देने वाली बने।
2. अपने जीवन में प्रकृति को अवसर मत दो और परमात्मा की गोद में जाने का प्रयत्न करो।
3. मन का सम्बन्ध कर्म से है और कर्मबद्धता के साथ-साथ रहता है जब तक आत्मा के साथ प्रकृति का मिलान है।
4. कर्मकाण्ड करने से मन की शुद्धि होने लगती है केवल शासन मात्र से इन्द्रियाँ शुद्ध हो जाती हैं।
5. मन अनादि तब तक है जब तक यह आत्मा जन्म लेने वाला है, जब तक संसार में आने जाने वाला है और मुक्त होने के पश्चात् इस आत्मा से मन का सम्बन्ध पृथक् हो जाता है, यह आनन्द में रमण कर जाता है।
6. सब कुछ शान्त होकर केवल आत्मा का स्वाभाविक गुण ज्ञान और प्रयत्न रह जाता है। वह होने के पश्चात् उसे बेटा! मुक्ति कहते हैं।
7. इसी प्रकार यह आत्मा जब परमात्मा के गर्भ में चला जाता है तो प्रकृति से इसका सम्बन्ध स्वयँ छूट जाता है।
8. तीन प्रकार की विद्याओं का पान करना इस संसार को पान कर लेना है।
9. त्रिविद्या को ही गंगा कहा है।
10. मानव का इस संसार में आने का उद्देश्य भी त्रिविद्या पाने का है।
11. जन्म-जन्मान्तरों के संस्कार हमारे अन्तःकरण में विराजमान रहते हैं, उनके जाग्रत होने का नाम स्मृति है।
12. अतः पवित्र करने वाली गंगा आत्मा ही है।
13. यह प्राण आत्मा का सहायक है। यह प्राण इस शून्य प्रकृति को चलाने वाला है।
14. मानव को उस प्रभु के अधीन होकर उसकी आज्ञा में चलना चाहिए।
15. शुद्ध ज्ञान के साथ नम्रता आएगी। ज्ञान न होगा तो नम्रता कभी भी न आ सकेगी।
16. मुनिवरो! मानव को बुद्धिपूर्वक एवम् महत्त्वपूर्ण विचार करने चाहिए। इस प्रकार से मानव के जीवन की रूप-रेखा बदलकर महान बन जाती है। मानव को सुन्दर रूप-रेखा बनानी चाहिए। यही मानव का कर्त्तव्य है।
17. हमारा तो यह आदेश है कि द्रव्य हो तो भी उस प्रभु की आज्ञा में रहकर कर्म करो।

।। ओ३म् ।।

स्मृति

स्व. श्री जगदीश त्यागी

श्री राजकिशोर त्यागी जी निवासी ग्राम मकनपुर, जिला-गाजियाबाद, उ.प्र. ने प्रकाशन कार्य के लिए 1100/- रु. का सात्विक सहयोग अपने बड़े भाई स्व. श्री जगदीश त्यागी जी की स्मृति में समिति के कार्य को प्रोत्साहित करने के लिए उनके 78वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में अर्पित किया है। जिससे अपने पितरों को श्रद्धापूर्वक नमः करते हुए समाज को वैदिक ज्ञान से सम्पन्न करने में अपनी सात्त्विक आहुति को प्रदान किया है। यह परिवार पूज्यपाद गुरुदेव के सान्निध्य में आने के पश्चात् निरन्तर उनके प्रवचनों व क्रियाकलाप से प्रभावित होता चला गया और उनके साहित्य का अध्ययन करते हुए अपने जीवन को याज्ञिक बनाने में संलग्न हो गया। समय-समय पर इस परिवार ने तन-मन-धन से किसी न किसी रूप में अपना सहयोग गाँधी धाम समिति व वैदिक अनुसँधान समिति के कार्यों में निरन्तर प्रदान किया है जिसके लिये समिति हृदय से आभार प्रकट करती है और परमपिता परमात्मा से परिवार के सभी सदस्यों के लिए सुख, समृद्धि व शान्ति के लिए प्रार्थना करती है।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

योगनिष्ठ पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (शृङ्गी ऋषि जी) की अमृतवाणी संहिता के रूप में

1.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 1)	80.00
2.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 2)	80.00
3.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 3)	50.00
4.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 4)	50.00
5.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 5)	50.00
6.	Yogic Wisdom of Ancient Rishis	50.00
7.	वेद पारायण-यज्ञ का विधि विधान	25.00
8.	आत्म-लोक	35.00
9.	धर्म का मर्म	30.00
10.	शंका-निवारण	30.00
11.	यज्ञ-प्रसाद अर्थात् यज्ञ का महत्व	40.00
12.	आत्मा व योग-साधना	35.00
13.	देवपूजा	40.00
14.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 1)	125.00
15.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 2)	125.00
16.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 3)	125.00
17.	रामायण के रहस्य	35.00
18.	यज्ञ एवं औषधि विज्ञान	40.00
19.	महाभारत के रहस्य	30.00
20.	अलङ्कार-व्याख्या	35.00
21.	रावण-इतिहास	50.00
22.	महाराजा-रघु का याग	25.00
23.	वनस्पति से दीर्घ-आयु	35.00
24.	मोक्ष प्राप्ति का मार्ग	30.00
25.	चित्त की वृत्तियों का निरोध	25.00
26.	आत्मा, प्राण और योग	35.00
27.	पंच-महायज्ञ	30.00
28.	अश्वमेघ-याग और चन्द्रसूक्त	30.00
29.	याग-मन्जूषा	25.00
30.	आत्म-दर्शन	30.00
31.	पुत्रेष्टि-याग और मातृ-दर्शन	25.00
32.	याग और तपस्या	45.00
33.	यागमयी-साधना	35.00
34.	यागमयी-सृष्टि	25.00
35.	याग-चयन	25.00
36.	दिव्य-रामकथा	110.00
37.	ज्ञान-कर्म-उपासना	25.00
38.	दिव्य-ज्ञान	35.00
39.	महाभारत एक दिव्य दृष्टि	90.00
40.	महर्षि-विश्वामित्र का धनुर्याग	25.00
41.	आत्म-उत्थान	30.00
42.	तप का महत्व	30.00
43.	अध्यात्मवाद	25.00
44.	ब्रह्मविज्ञान	35.00
45.	वैदिक-प्रभा	30.00
46.	प्रकाश की ओर	35.00
47.	कर्तव्य में राष्ट्र	35.00
48.	वैदिक-विज्ञान	35.00
49.	धर्म से जीवन	30.00
50.	आत्मा का भोजन	35.00
51.	साधना	30.00
52.	त्रेताकालीन-विज्ञान	40.00
53.	यज्ञोमयी-विष्णु	40.00
54.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 6)	80.00
55.	स्वर्ग का मार्ग	40.00
56.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 7)	80.00
57.	माता मदालसा	40.00
58.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 8)	80.00
59.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 9)	80.00
60.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 10)	80.00
61.	याग एक सर्वाङ्ग पूजा	80.00
62.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 11)	80.00
63.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 12)	80.00
64.	मानव कल्याण की चर्चाएं	50.00
65.	प्रभु दर्शन	50.00
66.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 13)	80.00
67.	समाज उत्थान का मार्ग	50.00
	पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज एवम्, कर्म भूमि लाक्षागृह	10.00

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

योगनिष्ठ पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की अमृतवाणी का साहित्य सँहिता, कैसेट्स, सी. डी. व डी. वी. डी. के रूप में निम्न स्थानों पर उपलब्ध हैः-

1. श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय, लाक्षागृह, बरनावा, जिला-बागपत, (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 01234-240395
2. श्री गुरुवचन शास्त्री, मकान नं. 165/30ए, दक्षिण भोपा रोड़, निकट माढ़ी की धर्मशाला, नई मण्डी, मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)। मो. नं. : 09412888050
3. सुश्री नीरू अबरोल, के-3, लाजपत नगर-3, नई दिल्ली। दूरभाष नं. 011-41721294
4. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, A-59 पंचशील एन्क्लेव, नई दिल्ली-110017 दूरभाष नं. 011-41030481
5. श्री जितेन्द्र चौधरी, ए-84, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017, मो. नं. 9811707343
6. श्री अनिल त्यागी, सी-47 रामप्रस्थ, गाजियाबाद (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0120-4165802
7. श्री आशीष त्यागी, डी-293, रामप्रस्थ, पोस्ट ऑफिस चन्द्रनगर, गाजियाबाद पिन कोड-201011 (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0120-2642052
8. श्री लोमश त्यागी, 106/4, पंचशील कालोनी गढ़ रोड़, मेरठ, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09410452076
9. श्री विवेक त्यागी, 16ए, अशोक कॉलोनी, अल्कापुरी, हापुड, (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0122-2316196
10. श्री संजीव त्यागी, 1107, सैक्टर-3, बल्लभगढ़, फरीदाबाद हरियाणा। मो. नं. 09910589486
11. मैं. हर्ष मेडिकोज, ए-2/31, सैक्टर-110-मार्किट नोएडा, फेस-2, (उ.प्र.) मो. नं. 09899228860, 09871367937
12. श्रीमती बाला, 251, दिल्ली गेट, नई दिल्ली। दूरभाष नं. 011-23282088
13. डॉ. अशोक कुमार आर्य, आर्यावर्त कालोनी निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा, जिला-जे.पी. नगर (उ.प्र.) मो. नं. 09412139333
14. श्री सुमन कुमार शर्मा, जे-380, सैक्टर बीटा-2, ग्रेटर नोएडा, (उ.प्र.) मो. नं. 09313530505
15. श्री सतीश भारद्वाज, ग्राम बहेडी, रोहाना मिल, जिला मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)।
16. मैं. विजय कुमार, गोविन्द राम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली। दूरभाष नं. 011-23977216

मासिक सहयोग

श्री हरीराम गुप्ता, केसर स्टील, वजीरपुर, दिल्ली	**1000 रुपये**
श्री चिंतामणि त्यागी एवं श्री जगमोहन त्यागी बरला, मुजफ्फरनगर	**1000 रुपये**
श्री संजीव त्यागी (दिनकरपुर) फरीदाबाद, हरियाणा	**1000 रुपये**
श्री अरुण त्यागी, राजनगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	**500 रुपये**
श्री विनोद त्यागी सुपुत्र श्री जयप्रकाश त्यागी मकनपुर, गाजियाबाद	**500 रुपये**
मा. कार्तिक त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	**251 रुपये**
मा. लोमश त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	**251 रुपये**
डॉ. शुचि, डॉ. राजीव, आणद, गुजरात	**250 रुपये**
श्री राकेश शर्मा, विराट नगर, पानीपत, हरियाणा	**250 रुपये**
डॉ. ओ.पी. आर्य, आगरा, उत्तर प्रदेश	**125 रुपये**
श्री गुलजार सिंह, जगत पुरी, कृष्णा नगर, दिल्ली	**100 रुपये**
श्रीमती वीना त्यागी, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश	**100 रुपये**
मास्टर कवन्धि, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	**101 रुपये**
मास्टर सिद्धार्थ, अँकुर अपार्टमैन्ट, दिल्ली	**101 रुपये**

सदस्य

पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की ज्ञान गंगा का मासिक पत्रिका ''यौगिक प्रवचन'' में, वैदिक अनुसन्धान समिति द्वारा प्रकाशन किया जाता है और जिस के आजीवन सदस्य बनने के लिए शुल्क 800 रु. और वार्षिक सदस्य बनने के लिए शुल्क 100 रु. है जिसको आप समिति के पते के साथ- साथ निम्न किसी भी एक पते पर डाक द्वारा भेजकर सदस्य बन सकते हैं—

1. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, प्रकाशन मंत्री
   ए-59, पंचशील एन्क्लेव, नई दिल्ली-110017, फोन : 011-41030481
2. सुश्री नीरू अबरोल, कोषाध्यक्ष
   K-3, लाजपत नगर,-III, नई दिल्ली-110024 फोन : 011-41721294
3. श्री जितेन्द्र चौधरी, प्रचार मन्त्री
   ए-84, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017, मोबाइल : 9811707343

शृङ्गीऋषि बेवसाईट

Website : www.shringirishi.in
Email : contact@shringirishi.in

उद्‌बोधन

हमारे जीवन में यदि वैदिकता नहीं है, महानता नहीं है, उदारता नहीं है तो हमारा जीवन कुछ नहीं कहलायेगा। वेद का हमारे जीवन में कितना सम्बन्ध, कितनी सुगठिता है इसी प्रकार मानव का जीवन तो उस वैदिकता से गुथा है, त्रयी विद्या है—ज्ञान-कर्म-उपासना। बिना इस तीन प्रकार के विद्या के मानव इस संसार सागर से पार नहीं होता। वह कहीं मान-अपमान की छत्र-छाया में रहता है, कहीं नाना प्रकार के कार्यों में संलग्न रहता है। परन्तु उसके द्वारा उदारता के लिए विशेष अंकुर जागृत नहीं हो पाते, परन्तु जब जागृत हो जाते हैं तो उसका जीवन सर्वशः वेदज्ञ होता है। आज हम वेद की उस परम्परा को अपनाना चाहते हैं जिस परम्परा को अपनाने के पश्चात् मानव मानव बन जाता है, ऋषि ऋषि बन जाता है। पवित्रता की वेदी पर हम रमण हो जाते हैं, भ्रमण करने लगते हैं।

पूज्यपाद-गुरुदेव

वर्ष 43 : अंक : 515
अगस्त 2015

मूल्य :
दस रुपये

प्रकाशक, मुद्रक : डा० मधुसूदनेश्वर प्रकाश (प्रकाशन मंत्री वै.अ.स.) द्वारा वैदिक अनुसंधान समिति पञ्जी०
के लिए नवप्रभात प्रिंटिंग प्रैस, दिल्ली से छपवाकर सी-38,
शिवालिक मालवीय नगर, नई दिल्ली-17 से प्रकाशित।
(अवै०) सम्पादक : डा० मधुसूदनेश्वर प्रकाश, दूरभाष : 41030481

RNI No. 23889/72
Delhi Postal R. No. DL (S)-01/3220/2015-17
Licence to Post without prepayment
U (SE)-70/2015-2017
POSTED AT N.D.PS.O ON 10/11-08-2015
Published on 5th day of the same month

POSTED AT N.D.PS.O ON 10/11-08-2015
Published on 5th day of the same month